उल्टा दरख्त

कृश्नचंदर

उलटा दरख्त

कृश्नचंदर

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 35 रुपये
पहला संस्करण 2005

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

उलटा दरख्त

जब यूसुफ का बाप मरा तो यूसुफ के पास एक झोंपड़ा, एक गाय, एक कुआँ और एक बगीचा बाकी रह गया था। बाकी सब कुछ जो था वह यूसुफ का बाप अपनी जिन्दगी ही में कर्ज की भेंट चढ़ा चुका था। कुछ गाँव के खोजे को, कुछ बादशाह को।

बाप के मरने के बाद यूसुफ की माँ ने यूसुफ से कहा, "अब हमारे पास कुछ नहीं रहा। अब तू सीधा बादशाह के पास चला जा और उसकी फौज में भर्ती हो जा।"

यूसुफ बड़ा बेवकूफ और मुँहफट था। वह सिर्फ बारह बरस का था और बात करने की उसे तमीज नहीं थी। इसलिए उसने माँ की बात न मानी। उलटा कहने लगा, "वाह, मैं क्यों बादशाह के पास जाऊँ?बादशाह खुद क्यों न मेरे पास आए?फौज की जरूरत उसे है, मुझे तो नहीं।"

माँ ने घबरा कर इधर-उधर देखा, बोली, "शश्श...आहिस्ता बात कर। बादशाह सुन लेगा तो जान से मार देगा।"

ऐसा ही हुआ। यह बात बादशाह के कानों तक पहुँच गई, क्योंकि जो बादशाह जुल्म करता है वह मुल्क में मुखबिर भी लगाए रखता है। ज्योंही उसे मालूम हुआ कि यूसुफ ने क्या कहा, वह

खुद यूसुफ के पास पहुँच गया। यूसुफ ने पहले अपने बादशाह को कभी नहीं देखा था। इसलिए उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

बादशाह ने कहा, "मैं बब्ब..बब..बादशाह सस्स..सस..सलामत हूँ।"

यूसुफ ने हँसते हुए कहा, "अरे तुम तो हकले हो?क्या सब बादशाह हकले होते हैं?"

बादशाह को बहुत गुस्सा आया। मगर उस वक्त उसे फौजियों की जरूरत थी। इसलिए गुस्से को पी गया। बोला, "नहीं कक्क..कक..कुछ हकले होते हैं, कुछ गग्ग..गग..गंजे होते हैं। कुछ बब्ब..बब..बहरे होते हैं। हर एक को कोक्क..को..कोई न कोई बीमारी जरूर होती है।"

"तुम्हें क्या बीमारी है," यूसुफ ने पूछा।

"मुझे जुल्म करने की बीमारी है," बादशाह ने हकलाते हुए कहा।

मगर मैं कहाँ तक उसके हकलेपन को बयान कर सकता हूँ। बादशाह का हकलापन बयान करते-करते मेरा कलम खुद न हकला हो जाए, इसलिए अब सीधे-सीधे लिखता हूँ। तुम जहाँ कहीं भी बादशाह की बातचीत आए, उसे खुद हकला के पढ़ो, बड़ा मजा आएगा।

यूसुफ ने कहा, "तो क्या मुझ पर भी जुल्म ढाने आए हो?"

बादशाह ने कहा, "नहीं, नहीं। अपनी फौज में भर्ती करने आया हूँ।"

"तनखाह क्या दोगे?"

बादशाह ने कहा, "मैं अपने फौजियों को तनखाह नहीं देता, लूट में से चौथा हिस्सा देता हूँ।"

"लूट कैसी?"

"मेरे फौजी दूसरे मुल्कों में जाते हैं। लूट-मार करते हैं और जो माल लाते हैं, उसमें से चौथा हिस्सा उनको देता हूँ। मगर तुमको दसवां हिस्सा दूँगा क्योंकि तुम अभी छोटे हो। बारह बरस के हो। ज्यादा लूट-मार नहीं कर सकोगे। जल्दी बोलो। तुम्हें मेरी नौकरी मंजूर है?मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"

यूसुफ ने सोच कर पूछा, "दूसरे मुल्कों में भी आदमी रहते हैं ना?"

"हाँ, बिल्कुल तुम्हारी तरह के आदमी होते हैं।"

यूसुफ ने कहा, "तो फिर मैं तुम्हारी नौकरी नहीं कर सकता।"

बादशाह ने अकड़ कर कहा, "जानते हो, तुम बादशाह सलामत से बात कर रहे हो!"

यूसुफ ने भी अकड़ कर कहा, "जानते हो, तुम एक मोची के बेटे से बात कर रहे हो!"

बादशाह मुस्करा दिया। उसने समझ लिया लड़का बेवकूफ है। अब उसने दूसरा रास्ता अख्तियार किया। उसने झोंपड़े के इर्द-गिर्द निगाह डाली। खूबसूरत बगीचे में खिले हसीन फूलों की तरफ देखा और बोला, "तुम्हारे बगीचे के फूल बहुत खूबसूरत हैं।"

यूसुफ इस तारीफ से खुश हुआ। बोला, "जितने फूल चाहिए, ले जाओ।"

बादशाह ने कहा, "जिस जमीन से ये फूल खिलते हैं, वह खुद कितनी खूबसूरत होगी। मैं इस जमीन को क्यों न ले लूँ।"

यह कह कर बादशाह ने ताली बजाई। पचास फौजी हाजिर हो गए और उन्होंने यूसुफ का बगीचा जब्त कर लिया, बहुक्म सरकार!

दूसरे दिन माँ ने यूसुफ से कहा, "अब तो बगीचा भी हाथ से गया। अब तू बादशाह की पलटन में भर्ती हो जा।"

यूसुफ ने कहा, "माँ, अगर मैं भर्ती हो गया तो मुझे जुल्म करने की बीमारी हो जाएगी। माँ, क्या तू चाहती है कि तेरा बेटा बीमार हो जाए?"

माँ ने कानों पर हाथ धर कर कहा, "तौबा..तौबा! बेटा, मैं तो दिन-रात तेरी सेहत की दुआएँ माँगती हूँ।" इतना कह कर माँ झोंपड़े के अन्दर चली गई। यूसुफ कुएँ से डोल खींच कर अपनी गाय को पानी पिलाने लगा । इतने में उसे अपने बगीचे में, जो अब बादशाह का हो चुका था, खूबसूरत कपड़े पहने एक लड़की नजर आई।

यूसुफ ने पूछा, "तुम कौन हो?"

लड़की ने कहा, "मैं बादशाह जादी हूँ। मैं अपने नए बगीचे की सैर के लिए निकली हूँ। मुझे झुक कर सलाम करो।"

"क्यों सलाम करूँ?" यूसुफ ने पूछा।

शहजादी ने अकड़ कर कहा, "मैं शहजादी हूँ।"

यूसुफ ने अकड़ कर कहा, "मैं मोची का बेटा हूँ।"

शहजादी ने कह, "मेरे कपड़े सोने के तारों के बने हैं।"

यूसुफ ने कहा, "मेरे दाँत बहुत मजबूत हैं।"

शहजादी ने कहा, "मैं हर रोज गाजर का हलवा खाती हूँ।"

यूसुफ बोला, "मैं गाजर उगाता हूँ। क्या तुम गाजर उगा सकती हो?"

शहजादी बोली, "नहीं।"

यूसुफ तल्खी से कहने लगा, "तुम सिर्फ हलवा खा सकती हो। खैर कहो, क्या काम है?क्यों आई हो?"

शहजादी बोली, "मुझे प्यास लगी है।"

यूसुफ ने कुएँ से डोल खींचा और शहजादी को पानी पिलाया। शहजादी ने पानी पी कर कहा, "तुम्हारे कुएँ का पानी तो बहुत मीठा है। ऐसा पानी तो मैंने जिन्दगी में कभी नहीं पिया।"

यूसुफ ने खुश हो कर कहा, "रोज यहाँ आ जाया करो तो मैं तुम्हें रोज इसी कुएँ का पानी पिला दिया करूँगा।"

"अगर यह पानी मीठा है तो यह कुआँ कितना मीठा होगा जिससे यह पानी निकलता है। मैं इस कुएँ को ही क्यों न ले लूँ!"

शहजादी ने ताली बजाई। पचास फौजी हाजिर हो गए और उन्होंने कुएँ को जब्त कर लिया। बहुक्म सरकार!

तीसरे दिन माँ ने फिर यूसुफ से कहा, "बेटा! अब तो फौज में भर्ती हो जाओ, वरना हम भूखे मर जायेंगे।"

यूसुफ ने कहा, "माँ, अभी यह गाय बाकी है। मैं गाँव के खोजे के पास बेच कर आता हूँ। जो रकम मिलेगी, उससे कुछ दिन रोटी खा लेंगे। फिर देखेंगे क्या होता है?"

माँ रोने लगी। गाय उसे बहुत प्यारी थी। मगर भूख का क्या इलाज! यूसुफ गाय को खोल कर गाँव के खोजे के पास ले गया। खोजे ने पूछा, "गाय कितना दूध देती है?"

"तीन सेर देती है। अच्छा दूध होता है। पी कर देख लो।"

"पी चुका हूँ। जब तुम्हारा बाप जिन्दा था, तब की बात है। गाय बहुत अच्छी है, मगर दूध कम देती है। तीन सेर दूध देती है, इसलिए इस गाय के तुम्हें तीन रुपये मिलेंगे।"

"सिर्फ तीन रुपये?" यूसुफ ने हैरान होके पूछा।

"हाँ", खोजे ने कहा, "एक सेर दूध का दाम एक रुपया होता है। इस हिसाब से तीन सेर के तीन रुपये हुए। अगर तुम्हारी गाय चालीस सेर दूध देती तो तुमको चालीस रुपये मिलते। मगर मैं क्या करूँ, तुम्हारी गाय सिर्फ तीन ही सेर दूध देती है?ये तीन रुपये ले जाओ। हिसाब बिल्कुल ठीक है।"

यूसुफ बेचारे को हिसाब कहाँ आता था। बोला, "चाचा! इससे तो मेरे घर का काम नहीं चलेगा।"

खोजे ने कहा, "तो ये तीन दाने ले जाओ।"

"ये तीन दाने कैसे हैं?"

"जादू के हैं। एक जादूगर को मेरा कर्ज देना था, वह दे गया था...इन तीन दानों को जो जमीन में बोएगा, उसकी जमीन में दूसरे ही दिन एक जादू का पेड़ निकलेगा जो आसमान तक पहुँच जाएगा। फिर तुम उस दरख्त पर चढ़ कर आसमान तक जा सकते हो। मगर शर्त यह है कि इन तीनों जादू के दानों को इकट्ठा बो दो।"

यूसुफ हैरत से खोजे की बात सुनता रहा। आखिर में खोजे ने कहा, "तो बोलो क्या लेते हो?ये तीन रुपये या ये तीन दाने?"

यूसुफ ने जल्दी से तीन दानों को अपनी मुट्ठी में दबाया और अपने घर की तरफ भागा। खोजा भागते हुए यूसुफ को देख कर मुस्कराया। बोला, "खूब उल्लू बनाया, गधे को!"

यूसुफ भागते हुए घर पहुँचा तो माँ ने कहा, "रुपये लाए?"

यूसुफ ने कहा, "मैं तो जादू के दाने लाया हूँ।"

माँ ने माथा पीट लिया, बोली, "सारी उम्र बच्चे ही रहोगे या कभी अक्ल की बात भी करोगे?अरे, इन तीन दानों का क्या होगा?रुपये लाए होते तो कुछ दो-चार रोज रोटी तो खाते। कैसा बेवकूफ है, मेरा बेटा!"

यूसुफ ने कहा, "ये तीन दाने जादू के हैं। इन्हें बाहर बगीचे में बोऊँगा, तो उनमें से जादू का एक पेड़ निकलेगा जो आसमान तक जायेगा। फिर उस पेड़ पर चढ़ कर आसमान तक जाऊँगा।"

माँ ने कहा, "आसमान पर जा कर क्या करोगे?"

बेटे ने कहा, "तुम्हारे लिए तारे तोड़ कर लाऊँगा।"

माँ ने सिर हिला कर कहा, "कैसे-कैसे सपने देखता है मेरा बेटा! इसको खोजे ने ठग लिया। जाती हूँ पड़ोसी के घर से कुछ माँग कर लाती हूँ।"

जब माँ चली गई तो यूसुफ ने मुट्ठी खोली और दानों को बाहर बगीचे की घास पर रख कर एक जगह जमीन खोदने लगा ताकि उन दानों को बो दे। इतने में एक कौआ काँय-काँय करता हुआ आया और दो दाने उठा के ले गया। यूसुफ बहुत परेशान हुआ क्योंकि खोजे ने कहा था कि तीनों दाने इकट्ठे बोना वरना जादू का असर नहीं होगा। यूसुफ गम के मारे रोने लगा। गाय भी गई, रुपये भी गए और आखिर में जादू के दाने भी गए। अब उसके पास सिर्फ एक दाना रह गया था। अब वह क्या करे?आखिर उसने सोचा, जो होगा देखा जाएगा। जादू का पेड़ न सही, कोई पौधा तो उगेगा। यह सोच कर उसने उस दाने को बगीचे की नरम भुरभुरी जमीन में बो दिया और झोंपड़े में जा कर आराम से सो गया।

रात को बादल बहुत जोर से गरजा और बिजली लहरा-लहरा कर कौंधती रही। बारिश, तूफान और हवा के झक्कड़ ने रात भर यूसुफ को सोने न दिया। रात को कई बार उठ कर बिजली की रोशनी में बगीचे की तरफ देखा, मगर उसे कहीं जादू का पेड़ नजर न आया। जब सुबह हुई और तूफान थमा तो यूसुफ भाग कर बगीचे में गया। तूफान ने बहुत से पौधे उखाड़ मारे थे। बहुत से पेड़ गिर गए थे और जहाँ उसने जादू का दाना बोया था, वहाँ बिजली गिरने से जमीन फट गई थी और जमीन में एक गहरा गड्ढा नजर आ रहा था। मगर जादू का दरख्त जो आसमान की तरफ ऊँचा जाता था, वहाँ कहीं नहीं था। यूसुफ बहुत मायूस हुआ। उसकी माँ भी रोने लगी। इतने में यूसुफ ने जो गौर से जमीन के अन्दर गड्ढे की तरफ देखा तो नजर आया कि उसके अन्दर एक बहुत बड़ा पेड़ उगा है, मगर उलटा उगा है। यानी यह दरख्त ऊपर आसमान की तरफ जाने की बजाय नीचे जमीन के अन्दर ही अन्दर, जहाँ तक यूसुफ की नजर गई, चला गया था। कई मील नीचे जाकर यह दरख्त अँधेरे में गुम हो जाता था।

माँ ने हाथ मलते हुए कहा, "अफसोस, यह दरख्त उलटा उग आया है। जाना था ऊपर आसमान को, चला गया नीचे जमीन के अन्दर! यह सब उस खोजे की कारस्तानी है।"

यूसुफ जमीन की शिगाफ (दरार) में उतर गया। उसने दरख्त के तने के गिर्द अपनी बाँहें लपेट ली और माँ से कहने लगा, "उलटा उगा है या सीधा! मैं तो अब इस दरख्त पर चढ़ के देखता हूँ कि यह कहाँ जाता है?"

माँ मिन्नत करते हुए बोली, "अरे बेटा! जमीन के अन्दर मत जाओ। अन्दर बहुत अँधेरा है। जाने क्या है, क्या नहीं है! मुझे तो आगे अँधेरा ही अँधेरा नजर आता है।"

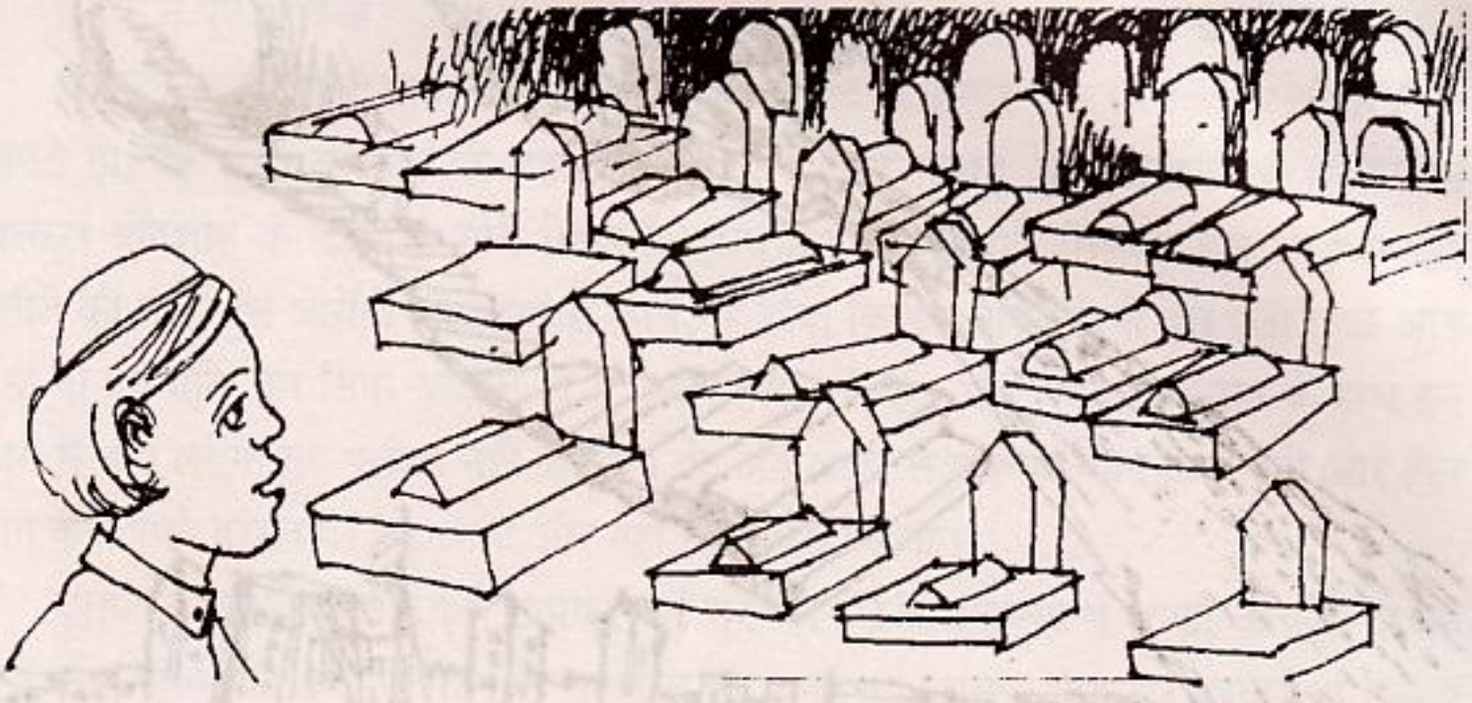

मगर यूसुफ ने माँ की एक बात न सुनी। वह जल्दी से दरख्त के तने पर चढ़ता हुआ जमीन में उतर गया। कुछ दूर तक सूरज की रोशनी उसके साथ रही और वह उसकी मदद से दरख्त की टहनियों पर चढ़ता रहा, मगर आगे जा कर रोशनी का आना बन्द हो गया और वह अँधेरे में दरख्त की शाखों को टटोल-टटोल कर आगे बढ़ने लगा।

...

कुछ दूर आगे जाकर इतना घटाटोप अँधेरा छा गया कि उसे बिल्कुल नजर न आया। यहाँ पर उसके कानों में तरह-तरह की आवाजें आने लगी, "मारो, मारो! जाने न पाए। बगावत कर दो, आग लगा दो। लुटेरों को लूट लो।"

यूसुफ बहुत घबरा गया। उसने हाथ से टटोला। उसे दरख्त के पास एक सीढ़ी मिली। यूसुफ ने दरख्त छोड़ दिया और सीढ़ी पर चढ़ने लगा। सीढ़ी पर चढ़ कर वह एक दरवाजे के पास पहुँचा। दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुल गया और उसने देखा कि वह एक बहुत बड़े गुम्बद के नीचे खड़ा है। चारों तरफ लोहे की सलाखें हैं और एक ताकचे में मोमबत्ती जल रही है। गुम्बद में कोई नहीं है। फिर भी ऐसा मालूम होता है जैसे हजारों आवाजें एक-दूसरे से लड़ रही हैं!

"कौन है?" यूसुफ गुम्बद के नीचे खड़ा हो कर चिल्लाया।

"कौन है?कौन है?"

यूसुफ की आवाज गुम्बद ही में गूँजी और फिर जवाब में हजारों कहकहे सुनाई दिए। यूसुफ के बदन के रोंगटे खड़े हो गए। मगर वह हिम्मत हारने वाला न था। उसने चिल्ला कर कहा, "जो

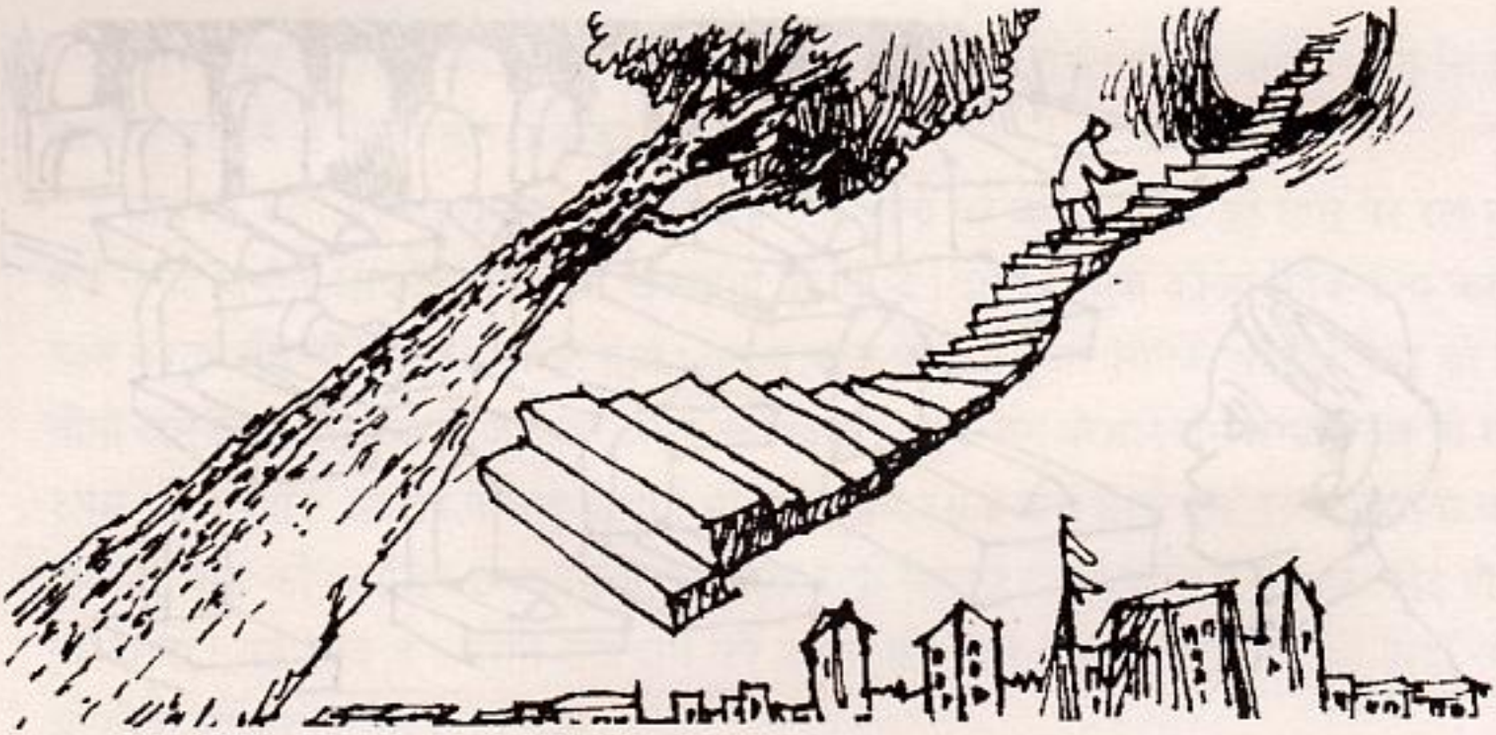

हँसता है, वह सामने आ जाए।"

जवाब में फिर जोर से कहकहे लगे और नारों की ऊँची-ऊँची आवाजें सुनाई दी जैसे हजारों-लाखों लोग किसी जुलूस में एक साथ चल रहे हों। अभी ये आवाजें उसके कान में आ ही रही थीं कि उसके बिल्कुल करीब ही से गोया एक आवाज सरगोशी में आई। उस आवाज ने कहा, "जानते हो तुम कहाँ हो?"

"नहीं", यूसुफ ने सिर हिला कर कहा।

"यह आवाजों का कब्रिस्तान है।"

"आवाजों का!"

"हाँ", नन्हीं-मुन्नी सरगोशी करने वाली आवाज ने कहा, "ये सब आवाजें उन आदमियों, शायरों, सियासतदानों की हैं जिनको हमारे बादशाह ने या तो कत्ल करा दिया है या जेल में डाल दिया है क्योंकि वे उसके जुल्म के खिलाफ आवाज उठाते थे।"

"फिर", यूसुफ ने पूछा।

"फिर यह हुआ कि कत्ल करने के बाद भी और जेल में डाल देने के बाद भी उन शायरों और लेखकों और सियासतदानों की आवाज नहीं रुकी और मुल्क में गूँजती रही। इस लिए बादशाह ने हम तमाम आवाजों को भी पकड़ लिया है और इस गुम्बद में बन्द कर दिया है। अब उसका ख्याल है कि ये आवाजें हमेशा के लिए दबा दी गई हैं और अब उसको हमसे कोई खतरा नहीं है। हा..हा. .हा..हा! बादशाह किस कदर बेवकूफ है!"

यूसुफ ने पूछा, "क्यों?"

"क्योंकि हम तमाम आवाजों ने मिल कर इस गुम्बद के अन्दर एक सुरंग तैयार की है। तुम जानते हो, यह सुरंग बादशाह के महल तक जाती है। यह गुम्बद, यह आवाजों का कब्रिस्तान बिल्कुल बादशाह के महल के नीचे स्थित है। अब हम सब आवाजें मिलकर इस सुरंग में एक पलीते की तरह घुस जायेंगी और तुम्हारा काम यह होगा कि इस मोमबत्ती से इस पलीते को आग लगा दो। क्योंकि हम सिर्फ आवाजें ही हैं, हमारे हाथ नहीं हैं। और जब तक इंसान के हाथ इस काम में नहीं लगेंगे, यह पलीता नहीं जलेगा। तो, अब जल्दी से तुम यह काम कर डालो और फिर भाग कर अपने दरख्त पर चढ़ जाना और वहाँ से तमाशा देखना।"

यूसुफ ने ताकचे से मोमबत्ती उठाकर कर सुरंग में रख दी। गुम्बद में लाखों आवाजें गरजने लगीं और बारूद की तेजी से सुरंग के अन्दर घुसती चली गईं। यूसुफ भाग कर दरवाजे से निकल गया और जल्दी से दरख्त पर चढ़ गया। अभी वह दरख्त की एक टहनी पर चढ़ा ही था कि एक जोर के धमाके की आवाज आई, जैसे आवाजों का गुम्बद फट गया हो। और फिर उसने देखा कि दरख्त से दूर, बहुत दूर तक हजारों मोमबत्तियाँ जल रही हैं और बहुत दूर तक उसका रास्ता रोशन हो गया है।

यूसुफ खुशी-खुशी दरख्त के ऊपर चढ़ता गया। तीन दिन और तीन रात दरख्त के ऊपर चढ़ता गया। रास्ते में अगर उसे भूख लगती तो पेड़ से जादू के दाने तोड़ कर खाता जिनका जायका अंगूर की तरह मीठा था। और अँगूर ही की तरह उनमें रस भी था। जादू के थे ना वे, इसी लिए।

खैर तीन दिन और तीन रातें ऊपर चढ़ने के बाद फिर अँधेरा छा गया। मोमबत्तियाँ खत्म हो गईं। अब भी वह अँधेरे में ऊपर चढ़ता रहा, मगर अँधेरा बढ़ता गया। उसने सोचा वह क्या करे, आगे बढ़े या पीछे लौट जाए। अभी वह सोच ही रहा था कि किसी ने झटके से उसे दरख्त से उतार लिया। उसे महसूस हुआ जैसे कोई उसे अपनी मुट्ठी में दबाए हुए हवा में उड़ रहा है। यूसुफ ने उसके पंजे से निकलने की बहुत कोशिश की मगर कामयाब न हुआ। थोड़ी दूर इस तरह हवा में उड़ने के बाद किसी ने उसे एक बहुत बुलंद और बड़े दरवाजे पर उतार दिया। यह दरवाजा इतना बड़ा था कि एक देव भी उसके नीचे से आसानी से निकल सकता था। यूसुफ तो खैर आदमी था. बड़ी आसानी से अन्दर चला गया। दरवाजे की मेहराब पर लिखा था—"काले देव का शहर"

यूसुफ अभी मेहराब पर लिखे हुरूफ (शब्द) पढ़ ही पाया था कि किसी ने उसे अपनी मुट्ठी में फिर उठा लिया और यूसुफ ने देखा एक बहुत बड़ा काला हाथ है, एक बहुत बड़ी काली छाती है, एक बहुत बड़ा काला चेहरा है जिसके अन्दर बड़ी-बड़ी रोशन और काली आँखें हैं। आखिर उन बड़े-बड़े काले ओंठों से एक गरजदार आवाज निकली और उसने पूछा, "तू कौन है?"

यूसुफ ने पूछा, "तू कौन है?"

"मैं काला देव हूँ।"

यूसुफ ने कहा, "मैं एक मोची का लड़का हूँ। जमीन से आया हूँ।"

"मगर तेरा रंग कैसा है, न काला है न सफेद?"

यूसुफ ने कहा, "हमारे यहाँ इसे गंदुमी (गेंहुआ) रंग कहते हैं।"

"अफसोस", काले देव ने कहा, "तू मेरे किसी काम का नहीं। मैं तुझे आजाद करता हूँ। जिधर से आया है, उधर चला जा।"

यूसुफ की समझ में कुछ न आया कि देव क्या कह रहा है। मगर वह अपनी जान बच जाने पर बड़ा खुश था। इसलिए जल्दी-जल्दी वहाँ से भागा। रास्ते में यूसूफ ने देखा कि वह एक बहुत बड़े शहर से गुजर रहा है जहाँ के सब अमीर लोग काले हैं और सब गरीब लोग सफेद हैं। काले लोग सफेद लोगों से गुलामों का सा काम लेते हैं और उन्हें बड़ी ही गन्दी झोंपड़ियों में रखते हैं। उन्हें हथकड़ियाँ पहनाते हैं, उन्हें चाबुक लगाते हैं। उनसे मजदूरी कराते हैं। सब मेहनत का काम सफेद लोग करते हैं--और काले लोग उनकी मेहनत पर ऐश की जिन्दगी गुजारते हैं। यूसुफ ने चार रातें और चार दिन उस शहर में बसर किए और हर जगह यही मंजर देखा। इसलिए जाने से पहले वह फिर काले देव के पास गया और उससे पूछा, "अमाँ, काले देव! भला यह क्या माजरा है, हर जगह सफेद लोग गुलाम हैं और काले लोग उनपर हुकूमत करते हैं।"

काला देव हँसा। बोला, "जब मैंने सुना कि तुम्हारी जमीन पर सफेद लोग काले लोगों पर हुकूमत करते हैं तो मुझे बड़ा गुस्सा आया। इसलिए मैंने अपनी हुकूमत में सफेद लोगों को अपना गुलाम बनाया है और काले लोगों को उनपर हुकूमत करने देता हूँ। मैंने तुम्हारी जमीन से पकड़-पकड़ कर सफेद लोग बुलवाए हैं और उनको हथकड़ियों में जकड़ रखा है।"

"यह बहुत बुरी बात है", यूसुफ ने कहा।

"कैसे?" देव ने पूछा।

यूसुफ ने कहा, "एक सफेद आदमी को मेरे सामने लाओ।"

एक सफेद गुलाम यूसुफ के सामने लाया गया।

यूसुफ ने कहा, "इसकी उँगली काटो।"

"हा..हा! हा..हा! बड़ी खुशी से।" देव ने सफेद आदमी की उँगली काट दी। उसमें से लाल-लाल खून बहने लगा।

यूसुफ ने काले देव से कहा, "अब तुम अपनी उँगली काटो।"

काले देव ने अपनी उँगली काटी। उसमें से भी लाल-लाल खून बहने लगा।

यूसुफ ने कहा, "देखो, तुम्हारी रंगत काली है। लेकिन खून लाल है। उसकी रंगत सफेद है, लेकिन खून उसका भी लाल है। चमड़ी की रंगत से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"फिर क्या होना चाहिएं?" देव शशो-पंज (उलझन) में पड़ गया।

यूसुफ ने कहा, "होना यह चाहिए कि न काला सफेद पर हुकूमत करे और न सफेद काले पर। दोनों मिल-जुल कर रहें और एक-दूसरे के फायदे में शरीक हों। मेरी अक्ल तो यही कहती है।"

देव ने सिर हिला कर कहा, "तुम्हारी अक्ल ठीक है। आज से मैं अपने सफेद गुलामों को आजाद करता हूँ। आज से मेरे शहर में काले और सफेद सब मिल-जुल कर रहेंगे और इकट्ठे मेहनत करेंगे। तुम भी यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें अपने शहर का सरदार बनाऊँगा।"

यूसुफ ने कहा, "नहीं, मुझे तो अभी उस दरख्त पर चढ़ना है जहाँ से तुमने मुझे उतारा था। अब अगर तुम मेरे हाल पर मेहरबानी करना चाहते हो तो मुझे फिर उसी दरख्त पर पहुँचा दो।"

देव ने युसुफ की बहुत मिन्नत-समाजत की, मगर यूसुफ न माना। आखिर काले देव ने उसे अपने हाथ पर उठा लिया और उसे वापस दरख्त की शाख पर रख दिया।

यूसुफ दरख्त पर चढ़ने लगा। अब उसने देखा कि बहुत दूर तक अँधेरा छँट गया है और बहुत दूर तक दरख्त की शाखों पर लाखों जुगनू ऊपर ही ऊपर आसमान के सीने की तरफ चमकते चले गए हैं।

...

उन जुगनुओं की मदद से यूसुफ बहुत दूर तक दरख्त पर चढ़ता चला गया। लेकिन एक जगह आ कर जुगनुओं की रोशनी खत्म हो गई। और अबके जो अँधेरा शुरू हुआ तो यूसुफ घबरा ही गया। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह सात दिन और सात रातों से इसी दरख्त पर चढ़ रहा है, लेकिन दरख्त खत्म होने में नहीं आता। यूसुफ घबरा कर दरख्त से वापस लौटने वाला था कि उसे उस घटाटोप अँधेरे में दो आँखें चमकती हुई नजर आईं। यूसुफ उन आँखों के करीब गया तो देखा

कि दरख्त की एक बड़ी सी डाली पर एक अजीब किस्म का जानवर बैठा है जिसका चेहरा उल्लू का सा है, लेकिन बाकी सब जिस्म आदमी का है और उसकी आँखों में से एक खौफनाक चमक निकल रही है।

यूसुफ ने हैरान हो कर उससे पूछा, "तुम आदमी हो कि उल्लू?"

"मैं हिंदुस्तानी फिल्मों का डायरेक्टर हूँ", उस अजीब मखलूक (प्राणी) ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें झपका कर कहा, "मैं दिन को सोता हूँ और रात को जागता हूँ।"

यूसुफ के गाँव में एक दफा चलता-फिरता सिनेमा आया था। इसलिए उसे उस अजीब मखलूक की बात समझने में ज्यादा देर नहीं लगी।

यूसुफ ने कहा, "मगर तुम यहाँ अकेले इस दरख्त पर बैठे क्या कर रहे हो?"

"मैं अकेला नहीं हूँ", फिल्म डायरेक्टर ने जवाब दिया। "जरा इस डाल पर आगे बढ़ कर देखो। मेरे दूसरे भाई-बन्द भी जादू के जोर से उल्लू बने हुए यहीं बैठे हैं—घुप्प अँधेरे में।"

और वाकई जब यूसुफ आगे बढ़ा तो उसे डाल पर सैकड़ों उल्लू नुमा जानवर नजर आए जो चुपचाप डाल पर टाँगे लटकाए और सिर झुकाए ऊँघ रहे थे।

यूसफ को उन बेचारों पर बड़ा रहम आया और बोला, "तुम्हारी ऐसी हालत किसने कर दी है?"

वही पहला फिल्म डायरेक्टर बोला, "दस साल के एक बच्चे के जादू के जोर से। वह बच्चा कहता था कि हम लोगों ने पिछले पच्चीस बरस में एक भी ऐसी फिल्म नहीं बनाई जो बच्चों के लिए हो। इसलिए हमें सजा दी जाती है।"

"वह बच्चा कहाँ है?"

फिल्म डायरेक्टर ने कहा, "इसी डाल पर सीधे तकरीबन तीन सौ गज तक चले जाओ। आगे तुम्हें रोशनी नजर आएगी। वहाँ एक बहुत बड़ा कैमरा दिखाई देगा। वह कैमरा इतना बड़ा है कि उसके शटर में से एक आदमी गुजर सकता है। तुम वहाँ जाकर कैमरे का बटन दबा के तीन दफा कहना कट..कट..कट। फिर कैमरे का शटर खुद-बखुद खुल जाएगा और तुम उसके अन्दर चले जाना। आगे जा कर वह बच्चा तुमको खुद मिल जाएगा।"

यूसुफ ने कहा, "मगर उस बच्चे की कोई निशानी तो बताओ।"

फिल्म डायरेक्टर ने कहा, "उस बच्चे के दोनों हाथों में सिर्फ एक-एक अँगूठा है। बाकी सभी उँगलियाँ कटी हुई हैं।"

"ऐसा क्यों है", यूसुफ ने पूछा।

फिल्म डायरेक्टर ने जवाब दिया, "हमें क्या मालूम। हम फिल्म डायरेक्टर हैं, ज्योतिषी नहीं हैं।"

यूसुफ डाल पर आगे बढ़ गया। डाल की आखिरी टहनी का आखिरी पत्ता एक बहुत बड़े कैमरे को छू रहा था। यहाँ मद्धिम-मद्धिम रोशनी भी थी। यूसुफ ने कैमरे का बटन दबाया। कैमरे का शीशा, यानी दरवाजा खुलकर अलग हो गया। थोड़ी दूर तक वह अँधेरे में चलता रहा। फिर यकायक कहीं पर एक खटका सा हुआ और चारों तरफ रोशनी ही रोशनी हो गई और उसने देखा कि वह एक बहुत बड़े शहर के दरवाजे पर खड़ा है।

मशीनों का शहर

जहाँ तक नजर जाती थी, यूसुफ को जगह-जगह ऊँची-ऊँची चिमनियों से धुआँ निकलता दिखाई दे रहा था। बड़ी-बड़ी ऊँची इमारतें थीं। शहर बड़ा खूबसूरत और साफ-सुथरा दिखाई दे रहा था। यूसुफ उसे देखकर बड़ा खुश हुआ। उसने सोचा, चलो कुछ रोज इसी शहर की सैर करेंगे। यह सोच कर उसने दरवाजे के अन्दर कदम रखा। उसके कानों में एक आवाज आई, "जेब सम्भाल कर चलिए, जेबकतरों से होशियार रहिए।"

यूसुफ ने इधर-उधर देखा। मगर उसे कहीं कोई आदमी दिखाई नहीं दिया जो यह आवाज दे सकता था। यूसुफ दरवाजे से निकल कर आगे सड़क पर चला गया। यकायक फिर एक आवाज आई, "फुटपाथ पर चलिए सरकार!"

यूसुफ घबरा कर फुटपाथ पर चलने लगा। सड़क पर मोटरें गुजरने लगीं। बड़ी खूबसूरत मोटरें थीं। आगे चौक पर जाकर ये सब मोटरें रुक गईं। एक लाल रंग की बत्ती के सामने ये मोटरें रुकी पड़ीं थी। यूसुफ ने सबसे आगे की मोटर में झाँक कर देखा तो हैरत से उसका मुँह खुला का खुला रह गया क्योंकि मोटर में कोई आदमी नहीं था। ज्योंही यूसुफ ने मोटर में झाँका, मोटर के अन्दर से आवाज आई, "आईए, तशरीफ लाईए।" फिर मोटर का दरवाजा आप ही खुल गया।

यूसुफ स्प्रिंगदार गद्दों पर डट कर बैठ गया। मोटर में से फिर आवाज आई, "कहाँ चलिएगा हुजूर?"

यूसुफ ने कहा, "बाजार ले चलो।"

इतने में हरी बत्ती जली। मोटर खुद बखुद रवाना हो गई। अब मोटर बाजारों में से गुजर रही थी। बाजार में हर दुकान खुली पड़ी थी और हजारों तरह की चीजें दुकानों पर नजर आ रही थी। खूबसूरत कपड़े, तरह-तरह के फल और केक-बिस्कुट और रंग-रंग की महकती हुई मिठाइयाँ। हर

चीज सजी हुई थी। मगर ताज्जुब की बात यह थी कि सारे बाजार में कहीं कोई आदमी नजर ना आता था। एक पेट्रोल पंप के पास जाकर मोटर खुद बखुद रुक गई। आवाज आई, "माफ कीजिए, पेट्रोल खत्म हो गया है। मैं जरा पेट्रोल ले लूँ। आप जब तक सामने की दुकान देखिए।"

दुकान देखने से पहले यूसुफ पेट्रोल पम्प देखने लगा। उसने देखा कि पेट्रोल का नल खुद बखुद उठा और मोटर में पेट्रोल डालने लगा और जब पेट्रोल डाल चुका तो फिर खुद बखुद अपनी जगह पर आकर रुक गया। यूसुफ घूम कर दुकान की तरफ मुड़ गया। यहाँ बड़ी अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ थालों में सजी हुई थीं। मगर न कोई दुकानदार था और न कोई गाहक था। यूसुफ ने दो गुलाबजामुन उठाए। दो रसगुल्ले खाए, एक इमरती खाई और रुमाल से मुँह साफ किया और वापस चलने को ही था कि किसी ने कहा, "जनाब, आठ आने तो देते जायें!" (याद रहे, यह कहानी पचास साल पहले 1954 में लिखी गई है और इसमें दर्ज चीजों के दाम उस वक्त के हैं। यही वजह है कि तुम्हें ये मिठाइयाँ इतनी सस्ती लग रही हैं।)

यूसुफ हैरान होकर पीछे मुड़ा। मगर दुकान पर कोई आदमी न था। यूसुफ को हैरत हुई। मगर उसने अपनी हैरत दबाते हुए कहा, "मेरी जेब में तो इस वक्त एक पैसा भी नहीं है।"

आवाज आई, "कोई बात नहीं। आपके हिसाब में लिख लिया जाएगा।"

इतने में एक खटका हुआ और यूसुफ ने देखा कि दुकान पर जहाँ दुकानदार बैठता है, वहाँ एक मशीन बैठी है। यूसुफ के जवाब देते ही उस मशीन में एक बत्ती जली। खटाक-खटाक की आवाज दो दफा आई और मशीन से एक लोहे का कमानीदार हाथ निकला। उस हाथ में एक चीनी मिट्टी की प्लेट रखी थी और उस प्लेट पर कागज के एक पुर्जे पर एक बिल छपा था जिसपर आठ आने की रकम दर्ज थी।

आवाज आई, "इसे अपनी जेब में रख लीजिए। शहर से वापस जाते हुए वक्त आपसे हिसाब कर लिया जाएगा।"

यूसुफ ने हैरान हो कर पर्चा लिया और मोटर में बैठ गया।

मोटर ने कहा, "कहाँ चलूँ?"

यूसुफ ने कहा, "थक गया हूँ। किसी ऐसी जगह ले चलो जहाँ आराम कर सकूँ।"

मोटर एक आलीशान होटल के दरवाजे पर रुक गई। खुद-बखुद मोटर का पट खुला। खुद-ब-खुद होटल का दरवाजा खुला। यूसुफ अन्दर चला गया। अब थोड़ी-थोड़ी बात उसकी समझ में आ रही थी। उसने इधर-उधर देखा। एक तरफ एक बड़ी सी मशीन पड़ी थी जो उसके आते ही रंगा-रंग रोशनी से चमकने लगी। यूसुफ उस मशीन के पास चला गया और बोला, "मुझे

एक कमरा चाहिए।"

मशीन ने कहा, "तुम्हारा नाम?"

"यूसुफ।"

"कहाँ से आए हो?"

"बादशाह की नगरी से।"

"कैसे आए हो?"

"जादू के दरख्त पर चढ़ के।"

"यहाँ कितने दिन रहोगे?"

"जितने दिन किसी इंसान की सूरत नजर ना आएगी।"

मशीन हँसी। यूसुफ भी हँसा। मशीन ने कहा, "यह सामने का कमरा है, उसको लिफ्ट कहते हैं। उसके अन्दर जा के खड़े हो जाओ। यह लिफ्ट तुमको तुम्हारे कमरे के सामने पहुँचा देगी।"

यूसुफ ने ऐसा ही किया। लिफ्ट ने उसको एक बहुत बड़े कमरे के सामने उतार दिया। यूसुफ जब दरवाजे के करीब पहुँचा तो दरवाजा आप ही आप खुल गया। अन्दर जा के क्या देखता है कि एक कमरा है, बहुत बड़ा। वह सारा का सारा तरह-तरह की मशीनों से भरा पड़ा है। एक कोने में एक कुर्सी रखी है और उस पर एक छोटा सा लड़का बैठा है। उसकी आँखों में गैर-मामूली चमक और कशिश (आकर्षण) है। और उस लड़के के हाथों पर उँगलियाँ नहीं हैं। सिर्फ अँगूठे बाकी रह गए हैं।

यूसुफ ने कहा, "अस्सलाम अलैकुम!"

लड़के ने कहा, "हैलो!"

यूसुफ ने पूछा, "तुम्हारी उँगलियाँ कहाँ हैं?"

लड़के ने कहा, "उँगलियों की जरूरत ही क्या है। यहाँ सब काम बटन दबाने से हो जाता है। उसके लिए अंगूठा काफी है।"

यूसुफ ने पूछा, "तुम्हारे इस शहर के लोग कहाँ रहते हैं?मैंने बाजारों में, सड़कों पर सब जगह घूम के देखा है, सिवाय तुम्हारे किसी आदमी की सूरत नजर नहीं आई। इस शहर के लोग कहाँ रहते हैं?"

लड़के ने कहा, "इस शहर में आदमी नहीं रहते। सिर्फ मशीनें हैं और बटन।"

"आदमी कहाँ गए?" यूसुफ ने पूछा।

"वे सब मर गए या मार दिए गए।" लड़के ने दुखी हो कर कहा।

"तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?" यूसुफ ने पूछा।

"वे भी मर गए। मेरे वालिद इस शहर के मालिक थे। उनका नाम तुमने सुना होगा। मोटू राम दरला!"

"हाँ! हाँ! सुना तो है। हमारे राजा के बहुत गहरे दोस्त थे।"

"उन्हें रुपया कमाने का बहुत शौक था। इसके लिए उन्होंने इस शहर में जगह-जगह कारखाने खोले थे जिनमें हजारों मजदूर काम करते थे। मेरे पिताजी को नई-नई मशीने मँगाने का बहुत शौक था। जब भी कोई मशीन आती, वह एक के बजाय एक सौ मजदूरों का काम करती। मेरे पिताजी कारखाने में वह मशीन लगा लेते। उसपर काम करने के लिए एक मजदूर रख लेते और बाकी निनानवे मजदूरों को निकाल देते। इस तरह ज्यूँ-ज्यूँ मशीनें बढ़ती गईं, लोग बेकार होते गए और भूख से मरने लगे।"

"क्यों ऐसा किया तुम्हारे पिताजी ने?जब एक मशीन सौ मजदूरों का काम करती तो तुम्हारे पिताजी सौ मजदूरों को ही रखते, मगर हरेक से थोड़ा-थोड़ा काम लेते। यानी बारह घंटे की बजाय बारह मिनट।"

"मगर पिताजी ऐसा नहीं सोचते थे। उनका कहना था कि मेरे मजदूर बारह घंटे काम करते थे तो अब भी उनको बारह घण्टे ही काम करना चाहिए, चाहे मजदूर एक रहे या एक सौ।"

"मगर यह क्यों?मशीन आदमी के लिए है, आदमी मशीन के लिए नहीं है। अच्छी और तेज काम करने वाली मशीन का फायदा आदमी को ही मिलना चाहिए ताकि उसकी मेहनत कम हो। समझ में तो यही आता है।"

"मगर मेरे पिताजी की समझ में नहीं आता था। वह मजदूर कम करने पर तैयार थे, मगर मजदूर के काम का वक्त कम करने को तैयार ना थे। कहते थे, इससे मजदूर बिगड़ जाएंगे। मशीन बिगड़ जाती है तो उसका पुर्जा नया डाल देने से उसे ठीक कर ले सकते हैं। लेकिन मजदूर बिगड़ जाए तो फिर उसे कौन सम्भालेगा?"

"अजीब उलटी खोपड़ी के मालिक थे तुम्हारे पिताजी!"

"सुनो तो", लड़के ने कहा, "होते-होते यह हुआ कि जब सब काम मशीनें करने लगीं और सब तरफ बेकारी और भूख बढ़ने लगी तो लोग मरने लगे। मगर पिताजी बहुत खुश थे क्योंकि उनका मुनाफा बढ़ रहा था। फिर एक दिन वह आया कि कहत (अकाल) से बाजार के बाजार खाली हो गए। बाजारों में बहुत सामान था, मगर लोगों के पास खरीदने को पैसा नहीं था। इसलिए थोड़े ही दिनों में हजारों की तादाद में लोग भूख से मर गए। बहुत से लोग बगावत में मारे

गए। जो बचे थे, वे शहर छोड़ कर भाग गए। एक दिन इस शहर में सिर्फ तीन आदमी रह गए—मैं और मेरे पिताजी और मेरी माँ। फिर मेरे पिताजी ने खुदकुशी कर ली क्योंकि इस शहर में कोई आदमी नहीं रहता था, इसलिए अब उन्हें मुनाफा भी नहीं होता था। तुम जानते हो नफा मशीनों से नहीं होता, आदमियों से होता है। जब कोई आदमी ही नहीं रहा तो पिताजी किससे नफा कमाते! आखिर में बेचारे मेरे पिताजी इस गम को सह नहीं सके और खुदकुशी कर के मर गए। तीन साल हुए, मेरी माँ भी चल बसी। तबसे मैं इस शहर में मैं अकेला हूँ और मशीनों के बटन दबाता रहता हूँ या फुर्सत में सिनेमा देखता हूँ। मगर कोई तस्वीर (फिल्म) भी ऐसी नहीं मिलती जो बच्चों के लिए हो। इसलिए मैंने तंग आ कर सब फिल्म डाइरेक्टरों को उल्लू बना कर दरख्त पर रख दिया। तुमने रास्ते में उनको देखा होगा?"

"हाँ! मगर तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारी उँगलियाँ किसने काट डालीं?"

"मेरे पिताजी ने। बात यह थी कि मुझे हाथ से काम करने का बड़ा शौक था और वह कहते थे कि काम करने की क्या जरूरत है। काम मशीनों को करने दो। आदमी को सिर्फ बटन दबाना चाहिए। इसलिए उन्होंने मेरी उँगलियाँ काट डालीं।" लड़के ने बड़े दुख से अपने हाथों की तरफ देखा।

यूसुफ ने कहा, "तुम मेरे साथ चलो। इस शहर को छोड़ दो। यह शहर नहीं है, मुनाफाखोरों का कब्रिस्तान है।"

लड़के ने कहा, "तुम्हारे साथ जाकर क्या करूँगा?"

यूसुफ ने कहा, "दरख्त पर चढ़ेंगे। नई दुनिया देखेंगे, तरह-तरह के लोग देखने में आएँगे।"

लड़के ने कहा, "लेकिन मैं दरख्त पर कैसे चढ़ूँगा?मैं तो सिर्फ बटन दबा सकता हूँ।"

यूसुफ ने कहा, "वह मैं सिखा दूँगा। तुम चलो तो। क्या नाम है तुम्हारा?"

"शून्य शून्य एक (001)!"

"यह कोई नाम है क्या?मुझे तो टेलीफोन का नम्बर मालूम होता है।"

"हमारे शहर में आदमियों के नाम नहीं होते। नम्बर होते हैं। मेरा नम्बर शून्य शून्य एक है।"

यूसुफ ने कहा, "मैं आज से तुम्हें मोहन कहूँगा।"

"मोहन?" शून्य शून्य एक ने दोहराते हुए कहा, "अच्छा नाम मालूम होता है – मोहन! घंटी की तरह बजता है।"

जब मोहन यूसुफ के साथ चलने लगा तो उसने शहर पर एक आखिरी नजर डाली और अफसोस से कहने लगा,

"मगर यह इतना बड़ा शहर! ये खूबसूरत सड़कें, कारखाने, कारें, मकान, घर?गली-कूचे, बाजार, दौलत के अंबार! इनका क्या होगा?"

"आदमी के बगैर उनकी कोई कीमत नहीं है। इन तमाम चीजों की कीमत आदमी से होती है। कपड़े आदमियों के पहनने के लिए होते हैं। मिठाइयाँ बच्चों के खाने के लिए होती हैं। सड़कें राहगीरों के गुजरने के लिए होती हैं। लेकिन अगर कारखाने में मजदूरों के हाथ काम ना करते हों और घरों में औरतों की हँसी ना सुनाई देती हो और गली-कूचों में बच्चों के शोर मचाने की आवाज ना आती हो—क्या तुमने किसी गली-कूचे में शोर मचाया है?"

"शोर मचाना किसे कहते हैं?" मोहन ने बड़ी उदास निगाहों से यूसुफ की तरफ देख के कहा।

यूसुफ ने अपनी बात अधूरी रहने दी। उसने मोहन को बाजू से घसीट कर कहा, "जल्दी से यहाँ से भाग चलो, वरना यह खामोश शहर तुम्हें खा जाएगा। अभी दस साल की ही उम्र में तुम्हारे चेहरे पर झुर्रियाँ देख रहा हूँ।"

यूसुफ मोहन को बाजू से पकड़ कर कैमरे की आँख से निकल आया। बाहर दरख्त की टहनी पर फिल्म डाइरेक्टर बड़ी संजीदगी से एक-दूसरे से बहस कर रहे थे। एक कह रहा था, "मैं तुम से बड़ा डाइरेक्टर हूँ।"

दूसरा कह रहा था, "नहीं मैं तुमसे बड़ा हूँ।"

पहले डाइरेक्टर ने कहा, "इसका सबूत?"

दूसरे डाइरेक्टर ने कहा, "इसका सबूत यह है कि मैं इस दरख्त की टहनी पर उलटा लटक सकता हूँ।" यह कह कर उसने अपने पर फड़फड़ाए और दरख्त की टहनी से चमगादड़ की तरह उलटा लटक गया।

पहले डाइरेक्टर ने कह, "मैंने तुम्हारी फिल्में देख कर ही मालूम कर लिया था कि वे फिल्में भी तुमने कैमरे से उलटा लटक कर बनाई हैं।"

यूसुफ ने मोहन से कहा, "इन लोगों की बहस में पड़ना हम बच्चों के लिए ठीक नहीं है। आओ, हम लोग आगे चलें।"

दरख्त की टहनी पर आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए वे फिर दरख्त के तने पर आ पहुँचे। मोहन ने यह होशियारी की कि वह एक टार्च ले आया। उस टार्च की रोशनी में दोनों दोस्त दरख्त के ऊपर चढ़ते गए। आगे मोहन और पीछे-पीछे यूसुफ ताकि मोहन अगर कभी दरख्त से गिरने लगे तो पीछे से यूसुफ उसे सम्भाल ले। मोहन अपने अँगूठे की मदद से बड़ी मेहनत और मुश्किल

से दरख्त पर चढ़ता जाता और यूसुफ उसे टार्च दिखाता जाता था। थोड़ी दूर अँधेरे में चढ़ने के बाद धीमी-धीमी रोशनी नजर आने लगी। ऐसी रोशनी जैसी चाँदनी रात में होती है। आगे जाकर उन्होंने देखा कि दरख्त की एक ऊँची डाली पर एक पिंजड़ा लटका हुआ है और उसमें चाँद बन्द है।

इस पिंजड़े के पास एक अजीब शक्ल का देव बैठा है जिसकी रंगत चाँदी की सी है। इस देव की आँखें चाँदी की थीं और जब वह बात करता था तो उसके मुँह से लफ्जों के बजाय रुपये निकलते थे और ये रुपये खनखनाते हुए, अजीब सी आवाज पैदा करते हुए नीचे एक बड़ी सी तश्तरी में गिरते जाते थे। इस तश्तरी के बीच में एक बड़ा सा सूराख था जिसमें एक नली लगी थी जिसका एक सिरा तश्तरी में और दूसरा सिरा उस देव की नाफ (नाभि) में लगा हुआ था। चुनांचे रुपये देव के होंठों से गिरते, आवाज पैदा करते हुए तश्तरी में खनखनाते और सूराख से गायब हो कर नली से होते हुए देव की नाफ के अन्दर चले जाते। यूसुफ ने उन गिरते हुए रुपयों को जब हाथ से पकड़ना चाहा तो उसने "सी" करके जल्दी से उन रुपयों को छोड़ दिया क्योंकि रुपये आग की तरह तप रहे थे। यूसुफ अपने हाथ की तरफ देखने लगा। उसका हाथ जल गया था, हथेली पर जगह-जगह छाले पड़ गए थे।

मोहन ने पूछा, "अब तुम दरख्त पर कैसे चढ़ोगे?"

देव ने हँस कर कहा, "आगे जाने की क्या जरूरत है?हमारी दुनिया में रहो।"

मोहन ने पूछा, "तुम्हारी दुनिया कौन सी है?"

देव ने अपने करीब ही रखे एक बहुत बड़े ढोल को उठा कर अपने गले में लटका लिया। ये ढोल बड़ा अजीबो-गरीब था। वह बड़ी अजीब चीज का बना हुआ था। ढोल के जो पर्दे होते हैं, वे दो रंग के थे। एक तरफ की खाल काली थी और दूसरी तरफ की सफेद।

यूसुफ ने पूछा, "ऐ बड़े देव, अगर जान की अमान पाऊँ तो कुछ अर्ज करूँ।"

देव ने बड़े घमण्ड से कहा, "बोल, क्या कहता है?तेरी जान बख्श दी हमने। बाअदब, बामुलाहिजा, होशियार! बोल क्या बकता है?"

यूसुफ ने कहा, "आपका यह ढोल लकड़ी की बजाय हड्डियों का क्यों बना है?"

देव ने कह, "लकड़ी बहुत महँगी होती है। इसलिए मैंने ढोल को इंसान की हड्डियों से तैयार किया है और उसपर चमड़ा भी इंसान का मढ़ा हुआ है क्योंकि दूसरे जानवरों का चमड़ा बहुत महँगा आता है।"

मोहन ने पूछा, "मगर एक खोल काला है और दूसरा सफेद है। इसका क्या मतलब है?"

देव ने कहा, "एक काले आदमी का चमड़ा है। दूसरा सफेद आदमी का चमड़ा है। मगर मैं दोनों को एक ही छड़ी से पीटता हूँ।"

फिर चाँदी के देव ने ढोल को पीटते हुए चिल्लाना शुरू किया, "डम-डम! डम-डम! आ जाओ। जादू की दुनिया देखो। इंसान का अम्बार देखो। लाओ सिर्फ चार आने। डम-डम! डम-डम!"

यूसुफ ने कहा, "लेकिन हमारे पास तो एक पैसा भी नहीं है।"

मोहन ने कहा, "नहीं, मेरी जब में आठ आने हैं।"

मोहन ने देव को आठ आने दिए और जादू की दुनिया के अन्दर दाखिल हो गया। अन्दर जा कर यूसुफ और मोहन ने देखा कि एक बड़ा लकोदक सहरा (विशाल रेगिस्तान) है। जमीन बंजर है। जगह-जगह रेत के टीले हैं। सहरा के बीच में एक लम्बा सा रास्ता है जिसपर इंसान की हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं और इस रास्ते पर लाखों इंसान रोते-कलपते हुए, एक-दूसरे को ढकेलते हुए आगे चल रहे हैं। इन दोनों लड़कों ने देखा कि हर इंसान के पाँवों में सोने की जंजीर पड़ी हुई है और यह जंजीर अगले आदमी की जंजीर से बँधी हुई है। ये लोग बहुत कमजोर नजर आते थे। उनसे बड़ी मुश्किल से चला जाता था और बहुत से लोग तो ऐसे थे कि उनके जिस्म की पसलियाँ तक अलग-अलग नजर आती थी।

यूसुफ ने पूछा, "तुम लोग कौन हो?"

एक आदमी ने जवाब दिया, "हम लोग सोने के देव के गुलाम हैं। उसने हम को कैद कर रखा है।"

यूसुफ ने कहा, "सोने का देव कहाँ है?"

"वह तुम को आगे मिलेगा।"

"आगे कहाँ?"

"जहाँ यह रास्ता खत्म होता है।"

जहाँ पर रास्ता खत्म होता था, वहाँ पर वाकई सोने का देव बैठा था। उसकी शक्ल-सूरत चाँदी के देव से मिलती-जुलती थी। फर्क सिर्फ इतना था कि जब वह बात करता था तो उसके मुँह से रुपयों की बजाय अशरफियाँ गिरती थीं और चाँदी की तश्तरी की बजाय सोने की तश्तरी में गिर कर देव की नाफ में गायब हो जाती थी।

देव ने लड़कों से कहा, "तुम्हारा टिकट कहाँ है?"

लड़कों ने डरते-डरते अपने टिकट दिखाए। सोने के देव ने कहा, "अच्छा है, तुम्हारे पास

टिकट हैं। वरना मैं तुम्हें भी अपना गुलाम बना लेता। अच्छा! अब मेरा तमाशा देखो।"

इतना कह कर देव ने अपने सामने खिंचे एक पर्दे को हटाया। और दोनों बच्चों ने देखा कि सामने लकोदक सहरा में एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी है और यह दीवार सारी की सारी सोने की है। सोने की इतनी बड़ी दीवार उन्होंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखी थी। मगर यह देख कर उनको और भी अचम्भा हुआ कि उस दीवार की बुनियादों में छोटे-छोटे सुराख बने हुए हैं और छोट-छोटे देवजादे उन सोने की जंजीरों को खींच-खींच कर उन सुराखों में डाल रहे हैं जो इंसानों के पैरों में बँधी हुई थीं।

"यह क्या हो रहा है?" मोहन ने पूछा।

देव ने कहा, "यह मैं सोने की दीवार उगा रहा हूँ।"

"सोने की दीवार भी उगती है!" मोहन ने हैरान हो कर पूछा।

देव ने कहा, "जितनी देर तुम्हें आए हुए हुई है, उतनी देर में यह दीवार दो फुट ऊँची हो गई है। देखो, गौर से देखो। तुम्हें दीवार उगती हुई मालूम होगी।"

बच्चों ने गौर से देखा। वाकई दीवार बढ़ती हुई मालूम होती थी। यूसुफ ने देवजादों की तरफ देखते हुए कहा, "मगर ये जो देवजादे हैं—ये वहाँ सोने की दीवार के पास क्या कर रहे हैं?"

"उसकी बुनियादों को सींच रहे हैं।"

यकायक देव ने ताली बजा कर कहा, "खुल जा सिम सिम!" और देवजादों ने अपनी सोने की जंजीरों को सूराख में डाल दिया। और मोहन और यूसुफ ने देखा कि वे सोने की जंजीरें नहीं थीं, सोने की नलियाँ थीं जिनमें से इंसानी खून बह कर सोने की दीवार के सूराखों में जा रहा था।

यूसुफ ने घबरा कर कहा, "मगर यह तो इंसानी खून है।"

देव ने हँसते हुए कहा, "मगर यह भी तो देखो कि दीवार कितनी ऊँची हो गई है!"

यूसुफ और मोहन वहाँ से सिर पर पाँव रख कर भागे। भागते-भागते वे जादू की दुनिया के बिल्कुल दूसरे हिस्से में चले आए। यहाँ पर एक चबूतरे के इर्द-गिर्द बहुत से लोग जमा थे। सैकड़ों-हजारों की तादाद में होंगे। चबूतरे की तरफ देख-देख के बोली दे रहे थे।

"दस हजार!"

"तीस हजार!"

"चालीस हजार!"

मोहन ने पूछा, "क्या बात है?किस चीज की बोली लग रही है?"

यूसुफ ने कहा, "आओ, आगे बढ़ के देखें।"

चबूतरे के करीब जाकर उन्होंने देखा कि एक लोहे के सुतून (खम्भे) से लोहे की जंजीरों से बँधी हुई एक बड़ी ही खूबसूरत शहजादी है। उसके नाजुक रेशमी बाल कमर तक लटक रहे हैं। उसकी कमल की डण्डी की तरह लम्बी गर्दन एक तरफ को झुकी हुई है और आँसू उसकी आँखों से बराबर बह रहे थे। मगर यूसुफ और मोहन को यह देख कर बड़ी हैरत हुई कि उसकी आँखों से जो आँसू गिर रहे हैं, वे दरअसल आँसू नहीं हैं, पारदर्शी मोतियों के दाने हैं जो उसकी आँखों से निकल कर जमीन पर गिरते जाते हैं, जहाँ एक आदमी किरमिजी रंग के गलीचे पर बैठा इत्मिनान से उन्हें चुनता जाता है और बोलता जाता है, "बोलो, बोलो! दाम लगाओ। यह कोई मामूली शहजादी नहीं है। रोती है तो उसकी आँखों से मोती गिरते है। देखते जाओ और दाम लगाओ।"

"एक लाख!" एक आदमी ने घबरा कर कहा।

"दो लाख!"

"दस लाख!" "चालीस लाख!!"

बोली बढ़ रही थी।

मोती जमीन पर गिर रहे थे।

मोहन ने कहा, "तुम उसकी क्या बोली दोगे?"

यूसुफ ने कहा, "मैं तो एक पैसा भी ना दूँगा। मुझे तो रोती हुई शहजादी जरा भी अच्छी नहीं लगती। मुझे तो हँसती हुई शहजादी चाहिए।"

मोहन ने कहा, "मगर सोचो तो यह मोतियों की रानी है!"

यूसुफ ने कहा, "फिर क्या हुआ?यह भी तो सोचो मोती हासिल करने के लिए उसे हर वक्त रुलाना पड़ेगा। उसे तरह-तरह की तकलीफें देनी पड़ेंगी, तब कहीं ये मोती मिलेंगे। मैं तो जुल्म के लिए तैयार नहीं हूँ।"

मोहन ने कहा, "तुम ठीक कहते हो। फिर इस बेचारी को किसी न किसी तरह बचाना चाहिए।"

यूसुफ ने कहा, "शहजादी तुम्हें अच्छी लगती है?"

मोहन ने कहा, "मेरे पास कहानियों की एक किताब थी। मेरे बाप ने वह किताब छीन कर फाड़ डाली। उसमें इस शहजादी की तस्वीर थी।"

यूसुफ कुछ देर चुप रहा। फिर उसने चिल्ला कर कहा, "ऐ शहजादी! अब जरा हँस कर तो दिखाओ।"

मोती चुनने वाला आदमी जोर से चिल्लाया, "खबरदार जो हँसी। जान से मार डालूँगा।"

यह कह कर उसने जोर से शहजादी की पीठ पर चाबुक लगाया। यूसुफ ने फिर जोर से कहा, "अगर बिकना नहीं चाहती हो तो हँसो। जोर से हँसो। तकलीफ भी हो, दर्द भी हो, तो भी हँसो। फिर देखो क्या होता है!"

शहजादी ने हँसना शुरू कर दिया। यकायक उसकी आँखों से मोती गिरना बन्द हो गया और होंठों से फूल झड़ने लगे। मगर ये मामूली फूल थे, जैसे गुलाब, जूही और नरगिस के फूल। खरीदारों को उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। नीलाम करने वाला धड़ाधड़ चाबुक लगाता गया। फिर भी शहजादी हँसती गई। खरीदार घबरा कर भाग गए क्योंकि वे मोतियों के खरीदार थे, फूलों के खरीदार नहीं थे।

थोड़ी देर में चारों तरफ उल्लू बोलने लगे। फिर नीलाम करने वाला भी चाबुक मारते-मारते खुद बेहोश हो कर गिर गया क्योंकि वह फूलों की खुशबू बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उसने उस दिन तक न तो फूल देखे थे और न ही फूलों की खुशबू सूँघी थी। इस लिए वह बेचारा बेहोश हो कर वहीं फूलों के अम्बार पर गिर गया। मोहन और यूसुफ ने आगे बढ़ कर शहजादी की जंजीरें खोल डालीं और उसे चबूतरे से नीचे उतारा और उसे अपने साथ ले चले।

चलते-चलते मोहन ने शहजादी का हाथ पकड़ लिया। शहजादी बहुत हँसी और बोली, "तुम्हारे हाथ में तो सिर्फ एक अँगूठा है!"

ज्योंही वह हँसी, उसके होंठों से एक साथ बहुत से फूल झड़ पड़े। जहाँ फूल झड़ कर जमीन पर गिरे, वहाँ बहुत से फूलों के पौधे उग आए। इस तरह जहाँ-जहाँ से शहजादी, यूसुफ और मोहन गुजरते गए, उस लकोदक सहरा को गुलजार बनाते गए। मोहन को चूँकि शहजादी मिल गई, इस लिए वह बहुत खुश था। यूसुफ से कहने लगा, "भाई, चलो वापस चलें।"

यूसुफ ने कहा, "अभी इस जादू की दुनिया की थोड़ी और सैर कर लें। चार आने का टिकट लिया है। कोई मुफ्त थोड़े ही आए हैं। देखो, वह सामने क्या है!"

जादूगरों का चुनाव
मशीनों का शहर

सामने बहुत से लोग रंग-बिरंगी झण्डिया हिलाते हुए जा रहे थे। यूसुफ, मोहन और शहजादी भी उन लोगों के पीछे-पीछे चलने लगे। मजमा जोर-जोर से नारे लगा रहा था, "अलाउद्दीन को वोट दो। जो अलाउद्दीन को वोट नहीं देगा, वह मुल्क का गद्दार होगा। अलाउद्दीन जिंदाबाद!"

मजमा इसी तरह नारे लगाता हुआ, झण्डियाँ हिलाता हुआ शहर के एक बड़े चौक पर पहुँचा। यूसुफ ने देखा—लोग भूखे नजर आ रहे हैं, उनके कपड़े बोसीदा और तार-तार हैं। मगर फिर भी खुश नजर आ रहे हैं।

यूसुफ ने पूछा, "भई, क्या माजरा है?"

एक आदमी ने हैरत से कहा, "सारी दुनिया को मालूम है और तुम्हें मालूम नहीं है! आज जादूगरों का इलेक्शन है। वह देखो, सामने अलाउद्दीन अपना चिराग हाथ में लिए इलेक्शन लड़ रहा है।"

यूसुफ ने देखा। वाकई बड़े रंगा-रंग के झण्डों के दरम्यान अलाउद्दीन खड़ा तकरीर कर रहा था।

अलाउद्दीन कह रहा था, "भाइयो और बहनो! मैं भी तुम्हारी तरह एक मामूली आदमी हूँ। मैं एक दर्जी का बेटा हूँ। मैं तुम्हारे दुख-दर्द पहचानता हूँ। मुझे मालूम है कि तुम लोग भूखे हो, गरीब हो, तुम्हारे जिस्म पर कपड़े नहीं हैं। बच्चों के लिए तालीम नहीं है। मुझे मालूम है कि पिछली हुकूमत ने तुम्हारे लिए कुछ नहीं किया। मगर वह सोने के देव की हुकूमत थी। मैं दर्जी का बेटा हूँ। मैं तुम्हारे सब दुख-दर्द दूर करूँगा। अपने इस जादू के चिराग की मदद से मैं तुम्हारे लिए हर तरह के ऐश का सामान मुहैया करूँगा। देखिए, मेरे जादू के चिराग के करिश्मे!"

यह कह कर अलाउद्दीन ने जादू के चिराग को अपनी हथेली से रगड़ा। फौरन एक जिन हवा में उड़ता हुआ नजर आया। और हवा ही में खड़ा हो कर कहने लगा, "अलाउद्दीन, क्या इरशाद है?"

अलाउद्दीन ने कहा, "मैं शहर के बेघर लोगों के लिए आलीशान महल बनाना चाहता हूँ। जरा एक महल लाके दिखा दो।"

जिन ने सिर झुकाया और गायब हो गया। दूसरे लम्हे वही जिन अपने हाथ पर एक आलीशान सात मंजिलों वाला चमकता हुआ महल लिए हाजिर हुआ। लोगों की निगाहें उस खूबसूरत महल की तरफ खिंचती चली गईं। महल के दरवाजे खुले थे। खिड़कियाँ खुली हुई थी।

महल के अन्दर रोशनियाँ जगमग-जगमग कर रही थी। अन्दर कमरों में बाजे बज रहे थे। खूबसूरत कालीन और सोफे बिछे नजर आ रहे थ। लम्बी-लम्बी मेजों पर तरह-तरह के फल चुने हुए थे। उम्दा खाने, भुने हुए मुर्ग, पुलाव, मुतंजन, जर्दे, कोरमे, तरह-तरह की सब्जियाँ, फालूदे, फिरनियाँ, शरबत, आईसक्रीम घूमती हुई मेजों पर रखी हुई लोगों को नजर आ रही थीं। लोगों की लार टपकने लगी।

लाखों गलों से आवाज आई, "अलाउद्दीन को वोट दो! अलाउद्दीन जिंदाबाद! एक वोट, एक मुल्क! एक अलाउद्दीन, एक चिराग!!"

यकायक अलाउद्दीन ने ताली बजाई। जिन अपने महल समेत गायब हो गया।

अलाउद्दीन ने कहा, "पहले मुझे वोट दो, फिर यह महल तुम्हें मिलेगा।"

लोग धड़ाधड़ वोट देने के लिए जाने लगे। यकायक दूसरी तरफ से आवाज आई।

"लोगो! बेवकूफ ना बनो। यह अलाउद्दीन दर्जी का बैटा तुम्हें बेवकूफ बना रहा है। असली जादू तो मेरे पास है। जादू की टोपी, सुलेमानी टोपी!"

लोगों का मजमा दूसरी तरफ पलट पड़ा जहाँ बहुत बड़े बैंड बाजे के साथ एक बहुत बड़े चबूतरे पर दो दर्जन लाऊडस्पीकरों के सामने एक जादूगर सुलेमानी टोपी हाथ में लिए तकरीर कर रहा था। यूसुफ, मोहन और शहजादी भी उधर चले गए। वह कह रहा था।

"अलाउद्दीन ठग है। उसे हरगिज वोट न देना। अलाउद्दीन का चिराग पुराना हो चुका है। उसका जिन भी बूढ़ा हो चुका है। इतने दिनों से वह तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सका, अब क्या करेगा?अबकी बार तुम मुझे वोट दो, क्योंकि मेरे पास सुलेमानी टोपी है। यह टोपी मैंने बड़ी मुश्किल से हासिल की है। हजारों तकलीफें सह के, अपनी जान की बाजी लगा के, बड़ी मुसीबतों के बाद मैंने इस टोपी को हासिल किया है।"

मोहन ने कहा, "इस टोपी में क्या खास बात है?मुझे तो यह सीधी-सादी सफेद रंग की टोपी दिखाई देती है।"

जादूगर ने मोहन की बात सुन ली। वह वहीं अपने चबूतरे से चिल्ला कर बोला, "यह कोई मामूली टोपी नहीं है। इसे पहन कर आदमी यूँ गायब हो जाता है जैसे गधे के सिर से सींग। देखो, देखो! सुलेमानी टोपी का कमाल! देखो।"

यह कह कर जादूगर ने सुलेमानी टोपी पहन ली और मजमा के दरम्यान से यकायक गायब हो गया। अब सिर्फ उसकी आवाज आ रही थी, "देखा! ये सुलेमानी टोपी का कमाल है। इसे पहन कर आदमी गायब हो सकता है।"

जादूगर ने अपने सिर से टोपी उतारी और अब वह लोगों को नजर आने लगा।

"इस टोपी को पहन कर आदमी गायब हो सकता है। जहाँ चाहे घूम सकता है। वह सारी दुनिया की सैर कर सकता है। वह जहाँ चाहे बगैर टिकट के जा सकता है और उसे कोई टोकने वाला नहीं। इस टोपी को पहन कर आदमी बड़े-बड़े राज मालूम कर सकता है, बड़े-बड़े लोगों के बड़े-बड़े राज! वह ऊँची से ऊँची सोसाइटी में जा सकता है और कोई उसे टोक नहीं सकता! इस टोपी को पहन कर आदमी वजीर बन सकता है, नौकरी हासिल कर सकता है। यह सुलेमानी टोपी है। इसके सामने अलाउद्दीन का चिराग बिल्कुल हेच (तुच्छ) है। इसे रगड़ने की जरूरत नहीं। बस इसे सिर पर पहन लीजिए, आपके सब काम पूरे हो जायेंगे। फिर लाउद्दीन के पास एक ही चिराग है। लेकिन मैंने सबके फायदे के लिए हजारों सुलेमानी टोपियाँ तैयार कराई हैं। ये बण्डल के बण्डल जो आप चबूतरे पर देख रहे हैं, ये सब सुलेमानी टोपियों के हैं। आईए, मुझे वोट दीजिए और एक सुलेमानी टोपी लेते जाइए। एक वोट, एक सुलेमानी टोपी!"

लोग धड़ाधड़ वोट देने के लिए भागने लगे और शोर मचाने लगे, "सुलेमानी टोपी जिंदाबाद! अलाउद्दीन का चिरागमुर्दाबाद!!"

"हाहा! हाहा!!" तीसरे चबूतरे से एक जोर का कहकहा बुलन्द हुआ। सब लोग उधर देखने लगे। वहाँ एक और जादूगर सिर पर सफेद कागज की टोपी रखे, सफेद कागज का कोट पहने, आँखों में चश्मा लगाए, हाथों में अखबार लिए हँस रहा था और कह रहा था, "दोस्तो! यह सुलेमानी टोपी वाला बहुरूपिया है, बहुरूपिया। यह खुद तो वोट ले कर गायब हो जाएगा और आपको कपड़े की टोपियाँ दे जाएगा, चाहे आप उनको सिर पर पहनिए, चाहे थैला बना कर घर ले जाइए। दोस्तो! यह सुलेमानी टोपी किस काम की?गायब हो कर आप क्या करेंगे?अगर आपको इस जादू की दुनिया में रहना है तो सच्चा जादू तलाश करने की कोशिश कीजिए। और सच्चे जादूगर को अपना बादशाह बनाइए। मुझे देखिए! मेरा जादू किसी को गायब नहीं करता। कोई हवाई महल नहीं दिखाता। मैं अभी आपके सामने वह चीज रखता हूँ जिसकी आपको जरूरत है।"

जादूगर ने उँगली से एक आदमी की तरफ इशारा किया। "कहो, तुम क्या चाहते हो?"

उस आदमी ने कहा, "मुझे अपनी जमीन में कुआँ चाहिए।"

जादूगर ने चबूतरे पर पड़े कागज के अम्बार से एक बड़ा सा कागज निकाला और उसपर कुछ मन्तर पढ़ के फूँका और उस आदमी को दिया। उसे उस कागज पर अपने खेतों की तस्वीर नजर आई। खेत बन्जर पड़े थे। यकायक उसे बीच में एक कुआँ नजर आया। कुएं पर रहट चलने

लगा। पानी फव्वारे की तरह निकल कर खेतों की सिंचाई करने लगा। आदमी के चेहरे पर रौनक आ गई। उसने देखा, उसके झोंपड़े से उसकी बीवी निकली, पानी का घड़ा लिए हुए। बीवी ने मुस्करा कर पति की तरफ देखा और पति उसी वक्त वह कागज हाथ में लें के अपने घर की तरफ भागा। वह भागता जाता था और कहता जाता था।

"मुझे मिल गया, मेरा कुआँ मिल गया।"

"तुम्हें क्या चाहिए?" जादूगर ने एक दूसरे आदमी से पूछा।

उस आदमी ने कहा, "हमारे कस्बे में कोई स्कूल नहीं है।"

जादूगर ने एक दूसरा पुरजा कागज का उठाया और उसपर मन्तर पढ़ कर कुछ फूँका और फिर वह पुरजा कागज का उस आदमी के हाथ में दे दिया।

उस आदमी ने गौर से उस कागज की तरफ देखा, जहाँ उसका घर था, उसके बिल्कुल करीब एक नई और खूबसूरत स्कूल की बिल्डिंग खड़ी थी। बच्चे किताबें हाथ में लिए जा रहे थे। एक खूबसूरत बागीचे में बच्चे खेल रहे थे। यकायक स्कूल के गेट पर उसे अपने दो बच्चे नजर आए। वे दोनों हाथ हिला कर हैलो पापा कहने लगे। आदमी उसी वक्त वह कागज अपने हाथ में ले कर वहाँ से भागा। भागते-भागते कह रहा था वह—"हमें स्कूल मिल गया, हमें स्कूल मिल गया।"

फिर क्या था। मजमा जादूगर पर टूट पड़ा।

एक बोला, "मुझे जूता चाहिए।"

जादूगर ने उसे कागज का पुरजा दिया।

दूसरा बोला, "मुझे मोटर चाहिए।"

जादूगर ने उसे कागज का पुरजा दिया।

तीसरा बोला, "हमें अपने गाँव में एक अस्पताल चाहिए। एक स्कूल, एक नहर, एक थियेटर चाहिए।"

जादूगर ने उसे कागज का एक पुरजा दिया।

मोहन ने यूसुफ से कहा, "तुम्हें कागज पर कुछ नजर आता है?"

यूसुफ ने कहा, "मुझे तो सफेद कागज ही नजर आता है।"

मोहन ने कहा, "मुमकिन है उन लोगों को कुछ नजर आता हो। लेकिन अगर मान लिया जाए कि उन्हें कुछ नजर आता है तो आखिर कागज पर ही नजर आता है। उसकी हकीकत क्या है।"

यूसुफ ने उस आदमी को बाजू से पकड़ लिया जिसने जादूगर से जूता माँगा था और उससे

पूछा, "तुम्हें जूता मिल गया।"

उस आदमी ने बड़े गुस्से से कागज का पुरजा यूसुफ के मुँह के सामने ला कर कहा, "देखते नहीं हो, मिल गया है। यह देखो।"

यूसुफ को सफेद कागज ही नजर आया।

यूसुफ ने कहा, "अगर यह जूता है तो इसे पहन कर दिखाओ?"

उस आदमी ने कागज के टुकड़े को पहनने की कोशिश की। कागज उसी वक्त बीच से फट गया। चरंद की आवाज सुनते ही जादूगर जोर से गरजा, "कौन है?कौन हकीकत पसन्द घुस आया है हमारी जादू की दुनिया में?उसे जल्दी निकालो। वरना ये सब कुछ तबाह कर देगा। हमारा जादू सब खत्म हो जाएगा।"

इतना सुनते ही अलाउद्दीन चिराग वाला, सुलेमानी टोपी वाला और जादू के कागज वाला और उनके हिमायती यूसुफ, मोहन और शहजादी के पीछे भागे। वह तो खैर हुई कि यूसुफ ने बड़ी चालाकी से काम लिया। उसने जल्दी से सुलेमानी टोपियों के बण्डल से तीन टोपियाँ निकालीं और उन्हें पहन कर मजमे के बीच में से गायब हो गए। वरना इतना बड़ा मजमा उनके पीछे पड़ जाता तो उनकी हड्डी-पसली भी नहीं बचती।

हाँफते-हाँफते तीनों जादू की दुनिया के दरवाजे से बाहर आ गए। बाहर चाँदी का देव बैठा चार आने के टिकट बेंच रहा था। उन्हें वापस आते देख कर बड़ी आजिजी से कहने लगा, "तुम्हारे पास खाने को कुछ है?तीन सौ साल से भूखा बैठा हूँ। मेरे हाल पर रहम खाओ और कुछ खाने को दो।"

यूसुफ और मोहन और शहजादी ने सुलेमानी टोपियाँ देव के हाथ में थमा दीं और कहा, "इन तीनों टोपियों को मिला कर पहन लो। फिर तुम्हें सब कुछ मिल जाएगा।"

जादू की दुनिया में चूँकि उन्हें खाने को कुछ नही मिला था, इसलिए मोहन, यूसुफ और शहजादी तीनों भूखे थे। और शहजादी तो बहुत ही भूखी थी क्योंकि उसे रुलाने के लिए खास तौर पर भूखा रखा गया था। इसलिए तीनों जादू की दुनिया से वापस आते ही दरख्त से फल तोड़-तोड़ कर खाने लगे। खाते-खाते मोहन ने शहजादी से पूछा, "तुम किस मुल्क की शहजादी हो?"

शहजादी ने कहा, "मैं तो सिरे से शहजादी हूँ ही नहीं। मैं तो एक डबलरोटी बेचने वाले की लड़की हूँ।"

"हाँय! शहजादी नहीं हो?" मोहन ने हैरत से कहा, "मगर वह तुम्हें बेचने वाला तो—"

"किस्सा यह है" शहजादी ने कहा, "शहर में मेरे बाप की एक छोटी सी दुकान थी जहाँ वह डबलरोटियाँ पकाया करता था। मेरा बाप, मेरी माँ और मैं, हम तीनों मिल कर खमीरी आटा गूँधते थे। उसे डबलरोटी के साँचे में भर कर चूल्हे में पकाते थे। खमीर उठाना, उसे साँचे में डालना, साँचे को आग में बस उतनी देर रखना कि रोटी ठीक से पक जाए, ना कम ना ज्यादा। यह बहुत मुश्किल काम है। पकती हुई डबलरोटियों को बाहर निकालना और ताजा रोटियों को चूल्हे में रखना भी बड़ा मुश्किल काम है। और मैं छोटी सी थी। मैं खेलना चाहती थी जबकि मुझे काम करना पड़ता था। एक दिन क्या हुआ कि मेरी माँ बीमार हो गई। अब मुझे और मेरे बाप को दुकान पर काम करना पड़ता था। मैंने बहुत सी रोटियाँ जला डालीं। इसपर मेरे बाप ने मुझे बहुत पीटा और दुकान से बाहर निकाल दिया। मैं बाहर सड़क पर खड़ी हो कर रोने लगी। इसके बाद मुझे मालूम नहीं क्या हुआ। मैंने इतना देखा कि एक बूढ़ा मेरे पाँव पर झुका जमीन पर से कुछ चुन रहा है। बूढ़ा उठ कर खड़ा हुआ और मेरी तरफ हैरत से देखने लगा। थोड़ी देर बाद वह मेरा हाथ पकड़ कर दुकान में वापस ले गया।"

उस बूढ़े ने मेरे बाप से कहा, "इस छोटी सी बच्ची को पीटते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?"

बाप ने कहा, "यह मेरी बच्ची है। मैं उसे पीट सकता हूँ। मैं उसका बाप हूँ। उसे मेरी दुकान में काम करना होगा। मुझपर बहुत सा कर्ज चढ़ा हुआ है। आज इसने कई दर्जन डबलरोटियाँ जला डाली हैं। इस नुकसान को कौन बर्दाश्त करेगा?मैं या तुम! मैं तो बहुत गरीब हूँ और एक वक्त का खाना भी बड़ी मुश्किल से निकाल पाता हूँ। इस पर तुम इसकी हिमायत करने आ गए हो। हालाँकि पहली बार आज मैंने उसे पीटा है।"

"अगर तुम गरीब हो और उसे पाल नहीं सकते तो इस लड़की को मुझे दे दो। मैं उसे अपनी बेटी बना लूँगा। उसे बहुत अच्छी तरह रखूँगा। उसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाऊँगा। अच्छे-अच्छे खाने खिलाऊँगा। अच्छी तालीम दूँगा और अच्छे घर में रखूँगा।"

मेरे बाप ने कहा, "और यहाँ, उसकी जगह मेरी दुकान पर कौन काम करेगा?तुम!"

बूढ़े ने कहा, "इसके बदले में इस दुकान का कर्ज अपने जिम्मे लेता हूँ और तुम्हें इतनी रकम दूँगा कि तुम जिन्दगी भर आराम से रह सकते हो।"

इतना कह कर बूढ़े ने अशरफियों से भरी हुई एक थैली मेरे बाप के हाथ में थमा दी। मेरा बाप कभी मेरी तरफ देखता था, कभी थैली की तरफ। आखिर उसने थैली कबूल कर ली और बेटी बेच दी क्योंकि वह बहुत गरीब था। फिर उसने यह भी सोचा होगा कि चलो बेटी उस अमीर बूढ़े के घर आराम से रहेगी।"

"तो तुम अपने बाप से अलग हो गई?" यूसुफ ने पूछा।

"हाँ।" शहजादी ने कहा। "वह बूढ़ा एक अमीर जौहरी था। मुझे अपनी खूबसूरत गाड़ी में बिठा के अपने घर ले गया। रास्ता में उसने मुझसे पूछा, 'क्या तुम हर रोज रोती हो?' "

मैंने कहा, "नहीं तो। मैं तो हर रोज हँसती रहती हूँ। आज ही पहली बार रोई हूँ।"

हूँ! यह कह कर बूढ़ा सोचने लगा। घर ले जा के बूढ़े ने मुझे बड़े आराम से रखा। अच्छे-अच्छे खाने, खूबसूरत कपड़े और मेरे लिए चार घोड़ों वाली गाड़ी। उस घर में हर तरह का आराम था। बस एक नुक्स था।"

"वह क्या?" मोहन ने पूछा।

"बूढ़ा रोज रात के खाने के बाद मुझे पीटता था। मैं रोती, चीखती-चिल्लाती तो वह ग्रामोफोन बजाने लगता ताकि मेरी आवाज बाजे की आवाज में दब जाए। यह सिलसिला कोई एक या आधे घंटे तक जारी रहता, जब तक मैं रो-रो कर थक ना जाती। बूढ़ा चैन से ना बैठता। वह मुझे रुलाता और मेरी आँखों से गिरते हुए आँसुओं के मोतियों को एक रेशमी रूमाल में चुन लेता और फिर अपनी दुकान पर ले जा के सजा देता। ग्राहक मोतियों को देख कर बहुत हैरान होते क्योंकि किसी जौहरी की दुकान पर ऐसे खूबसूरत मोती नजर ना आते थे। वे ऐसे शफ्फाफ (पारदर्शी) और चमकते हुए मोती थे कि समुन्दर के मोती उनके सामने बिल्कुल झूठे मालूम होते थे। होते-होते यह खबर बादशाह तक पहुँची। बादशाह ने जौहरी के मोतियों को परखा। वह देखता रह गया। उसको भी अच्छे-अच्छे मोतियों, जवाहरात और दूसरे कीमती पत्थरों को जमा करने का शौक था। हर बादशाह को चीजें जमा करने का शौक होता है। कोई पत्थर जमा करता है। कोई टिकटें जमा करता है। खैर थोड़ी देर तक मोतियों को देखने के बाद बादशाह ने जौहरी से कहा।"

"ये मोती तुम कहाँ से लाते हो?"

जौहरी ने दो-चार दफा झूट बोलने की कोशिश की, मगर बादशाह बहुत चालाक था। उसने जौहरी से कहा।

"सच-सच बताओ। यह मोती कहाँ से हासिल किए हैं, वरना कत्ल करा दिए जाओगे।" बादशाह ने जल्लाद को हाजिर होने का हुक्म दिया।

जौहरी थर-थर काँपने लगा। उसने हाथ जोड़ कर और गिड़गिड़ा कर अपनी जान बख्शी की दरखास्त की और कहा, "हुजूर! यह मोती समुन्दर के नहीं हैं। यह मोती एक डबलरोटी बेचने वाली लड़की के आँसू हैं।"

बादशाह को यकीन नहीं आया। मगर जौहरी के बार-बार कहने पर बादशाह को मानना पड़ा। उसने जौहरी से कहा, "जाओ, उसे फौरन दरबार में पेश करो।"

"चुनांचे मैं दरबार में लाई गई और बादशाह के सामने रुलाई गई। बादशाह मुझे रोते देख बहुत खुश हुआ क्योंकि वाकई मेरे आँसू पलकों से गिरते ही मोती बन जाते थे। और जैसा कि मैंने अभी कहा, बादशाह को भी कीमती पत्थर जमा करने का बड़ा शौक था। उसने जौहरी को कत्ल करा दिया और मुझे अपने महल में रख लिया और मेरे कमरे के चारों तरफ पहरा लगा दिया।"

"बादशाह के महल में मुझे दिन में एक बार नहीं चार-चार बार रुलाया जाता था क्योंकि वह बादशाह अपने करीब के एक दूसरे मुल्क पर चढ़ाई करना चाहता था। और चढ़ाई के लिए फौज की और फौज के लिए सामान और रुपयों की जरूरत थी। इस जरूरत को पूरा करने के लिए मेरे आँसू काम में लाए गए। और जब बादशाह का खजाना मोतियों से भर गया तो उसने दूसरे मुल्क पर चढ़ाई कर दी। इत्तेफाक की बात कि बादशाह को बुरी तरह शिकस्त हुई और दूसरे मुल्क वालों ने बादशाह की राजधानी पर हमला कर दिया। खूब लूट-मार हुई। बादशाह का महल भी लूटा गया। मैं इस लूट में एक सिपाही के हाथ आई। उसने मुझे एक छोटी सी लड़की समझ कर दस अशरफियों के एवज एक सौदागर के हाथ फरोख्त कर दिया जो गुलामों की तिजारत करता था। आगे जो कुछ हुआ वह तुम सब जानते हो।"

यूसुफ ने मोहन से कहा, "चलो भई, अब आगे भी बढ़ोगे या कहानियाँ सुनते रहोगे?"

यूसुफ, मोहन और शहजादी तीनों दरख्त पर चढ़ने लगे। यूसुफ ने मोहन से कहा, "मैं आगे-आगे चलता हूँ। तुम मेरे पीछे-पीछे आओ और ऐ मिस डबलरोटी," यूसुफ ने शहजादी से कहा, "तुम जरा मोहन की मदद करो। बेचारे के हाथ पर सिर्फ एक अँगूठा है। अगर तुम मदद नहीं करोगी तो यह दरख्त चढ़ नहीं सकेगा।"

शहजादी को अपना नाम बहुत पसन्द आया। मिस डबलरोटी हँसने लगी। फिर बोली, "मोहन बेचारा किस कदर मजबूर है!"

मोहन ने गुस्से से कहा, "मैं इस कदर मजबूर नहीं हूँ। इस दरख्त पर चढ़ते-चढ़ते मेरे हाथों में खुजली होने लगी है। मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे मेरे हाथों की उँगलियाँ अन्दर ही अन्दर फिर से उग रही हैं।"

बहुत देर तक यूसुफ, मोहन और मिस डबल रोटी दरख्त के उपर चढ़ते रहे। यूसुफ मोहन की टार्च से रास्ता दिखाता जा रहा था। आखिर एक जगह पर जा कर यूसुफ रुक गया। दरख्त की एक बहुत बड़ी शाख पर एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा था। उसपर मोटे-मोटे हरफों में लिखा था।

"खबरदार! अन्दर कदम न रखना। यह साँपों का शहर है।"

"उई!" शहजादी जोर से चिल्लाई। "भई, मुझे साँपों से बड़ा डर लगता है।"

"मुझे भी!" मोहन बोला। "चलो, आगे चलो।"

यूसुफ ने कहा, "नहीं, अन्दर चलो। यह शहर भी देख कर जायेंगे।"

दरख्त की शाख पर चलते-चलते वे तीनों शहर के दरवाजे पर पहुँच गए। दरवाजा अन्दर से बन्द था। यूसुफ के खटखटाने पर एक पहरेदार ने कहा, "अगर जान की अमान चाहते हो तो...."

यूसुफ ने टोक कर कहा, "हम नहीं चाहते।"

पहरेदार ने कहा, "तुम्हारा भला इसी में है कि लौट जाओ।"

"आओ जी..." यूसुफ ने मोहन और शहजादी को हाथ से पकड़ा और दरवाजे के अन्दर दाखिल हो गया। उनके अन्दर दाखिल होते ही पहरेदार ने पहले तो उनकी अच्छी तरह तलाशी ली और फिर जल्दी से दरवाजा बन्द कर लिया। यह बड़ा खूबसूरत शहर था। गलियाँ, मकान, बाजार, सड़कें सब पक्की थी। सीमेण्ट और कंकरीट की बनी हुई। सफाई इस कदर थी कि कहीं पर एक तिनका भी पड़ा नजर नहीं आता था। लोग साफ-सुथरे कपड़े पहने घूम रहे थे। मगर सब खामोश से, परेशान नजरों से इधर-उधर देखते हुए चल रहे थे। किसी के चेहरे पर मुस्कराहट नहीं थी। दुकानदारों ने दुकानों के सामने लोहे की जालियाँ लगा रखी थी और उनके पीछे चुपचाप बैठे थे। ग्राहक आता और सौदा तलब करता तो लोहे की एक छोटी सी झिरी खुलती और दुकानदार का हाथ उसमें से बाहर निकलता। सौदा दे देता, पैसे ले लेता और फिर लोहे की झिरी खट से बन्द हो जाती। बड़ी अजीब बात थी कि सिर्फ दुकानों ही पर लोहे की जालियां नहीं थीं, बल्कि हर घर के दरवाजे पर, हर गली के मोड़ पर, हर मकान की खिड़की पर लोहे की जाली थी।

"वह देखो! वह क्या है?" मोहन ने ऊपर आसमान की तरफ इशारा करते हुए यूसुफ से कहा।

यूसुफ ने सिर ऊँचा करके देखा। शहर के ऊपर भी, सबसे ऊँची इमारत के ऊपर एक लोहे की जाली लगी हुई थी। यह लोहे की जाली सारे शहर का अहाता किए थी।

यूसुफ ने कहा, "अजीब शहर है यह!"

शहजादी ने कहा, "सबसे अजीब बात यह है कि हमें इतनी देर हो गई इस शहर में घूमते हुए, हमने कहीं पर एक दरख्त तक नहीं देखा। एक झाड़, एक बाग, एक फूल, कुछ भी नहीं देखा!"

अब जो यूसुफ और मोहन ने गौर किया जो उन्हें भी यह बात बड़ी अजीब लगी। सचमुच सारे शहर में एक दरख्त ना था। एक बाग ना था। एक फूल तक नजर ना आता था।

"माजरा क्या है!" यूसुफ ने बड़ी हैरत से कहा। उसने इर्दगिर्द चलते हुए लोगों से भी कई बार पूछा। मगर किसी ने उसके सवाल का जवाब ना दिया। बल्कि सवाल सुनते ही लोग काँपने लगते। उनका चेहरा जर्द पड़ जाता और वे खामोशी से सिर झुकाए बढ़ जाते।

"जरूर कोई बात है।" यूसुफ ने अपने साथियों से कहा।

मोहन ने कहा, "चलो, यहाँ से भाग चलें। इसे देख कर मुझे अपना शहर याद आता है। फर्क सिर्फ इतना है कि वहाँ लोग नहीं थे, यहाँ लोग हैं। मगर ऐसा लगता है कि उनका होना ना होना बराबर है।"

यूसुफ ने कहा, "नहीं, नहीं! अब आए हैं तो यह मालूम कर के ही जायेंगे।"

शाम को ये तीनों साथी थक कर एक सराय में जा ठहरे। मगर यहाँ भी उनकी अच्छी तरह तलाशी ली गई। यूसुफ के सवाल करने पर भी सराय वाले ने नहीं बताया कि वह क्यों उनकी तलाशी ले रहा है।

कमरे में पहुँच कर यूसुफ ने देखा कि लोहे के पलँग पर लोहे के निहायत बारीक तारों का बना हुआ बिस्तर लगा है। तकिया, चादरें, गिलाफ हर चीज लोहे के बारीक तारों से बनी हुई थी। बिस्तर इस अन्दाज का बना हुआ था कि आदमी बिस्तर में घुसके उपर से लोहे की जिप लगा कर इत्मिनान से उसके अन्दर इस तरह सो जाता था जैसे आदमी किसी लोहे के पिंजड़े में सो रहा हो।

"अजीब शहर है यह!"

शहजादी ने कहा, "मुझे तो प्यास लगी है।"

यूसुफ ने इधर-उधर देखा। आखिर उसे एक कोने में पानी का नल नजर आया। नल की टोंटी पर भी लोहे की छलनी लगी थी जिसमें से पानी छन कर आ रहा था। खैर हुई कि पानी लोहे के बारीक तारों का बना हुआ नहीं था। वरना शहजादी के हलक में ही फंस जाता।

शाम के वक्त ज्यों ही सूरज अस्त हुआ, उन तीनों साथियों ने देखा कि सारे शहर में सूरज की तरह चमकती हुई एक नई रोशनी फैल गई। रोशनी इतनी तेज थी कि शहर का कोई कोना उससे महफूज नहीं था। कहीं पर अँधेरा नहीं रहा। बाहर की सड़क आइने की तरह चमक रही थी। उस पर एक बाल भी पड़ा होता तो साफ नजर आ जाता।

"यह रोशनी कहाँ से आ रही है?" यूसुफ ने पूछा।

मोहन ने बाहर खिड़की की तरफ इशारा कर के कहा, "वह देखो!"

"खिड़की से बाहर देखने की क्या जरूरत है?छत की तरफ देखो।" शहजादी ने कहा।

वे तीनों छत की तरफ देखने लगे। सराय की छत शीशे की बनी हुई थी और उसमें रोशनी

छन कर अन्दर आ रही थी। रोशनी एक बड़े मीनार के ऊपर से आ रही थी जिसके ऊपर एक सूरज की तरह चमकने वाला गोला घूम रहा था।

यूसुफ ने कहा, "इस रोशनी में सोयेंगे कैसे?"

शहजादी ने कहा, "बड़ी आसान बात है। अपने हाथ आँखों पर रखो और सो जाओ।"

फिर तीनों ने ऐसा ही किया। अपने हाथ आँखों पर रखे और सो गए। यकायक आधी रात के वक्त कहीं से जोर से चीख बुलम्द हुई। शहजादी हड़बड़ा के जाग उठी। उसने मोहन को जगाया। मोहन ने यूसुफ को जगाया। यूसुफ ने आँख मलते हुए कहा, "क्या है, भई! सोने भी नहीं देते?"

"उठो, उठो! ये चीखें सुनते हो?"

सचमुच सराय के बाहर चीखों की आवाज बढ़ती जा रही थी। अब उसमें औरतों और मर्दों और बच्चों के रोने की आवाज भी शामिल हो गई थी। यूसुफ, मोहन और शहजादी जल्दी उठे और सराय के बाहर गए।

सराय के बाहर सड़क पर लोगों की बड़ी भीड़ थी। मगर इस भीड़ में हर शख्स रो रहा था और अपनी छाती कूट रहा था। आगे आगे कुछ लोग दस सन्दूकों को अपने सिर पर उठाए चल रहे थे। सचमुच लोग रो रहे थे।

"भई, इन सन्दूकों में क्या है?" यूसुफ ने एक आदमी से पूछा।

"हुश्श! आहिस्ता बात कर। इन सन्दूकों में उन खुशनसीबों की लाशें हैं जिन्हें आज रात श्री साँप जी महाराज ने डस लिया है।"

"साँप ने डस लिया है?"

"शिश्श!" उस आदमी ने आहिस्ता से कहा। "साँप नहीं, श्री साँप जी महाराज कहो। अगर कहीं उन्होंने सुन लिया तो खफा हो जायेंगे।"

"कौन खफा हो जायेंगे?"

"श्री साँप जी महाराज। और फिर मुझे डर है कि कहीं तुमको भी डस कर खुशनसीब ना बना दें।"

"साँप के काटे से आदमी खुशनसीब बन जाता है! वह तो मर जाता है।" शहजादी ने हैरत से पूछा।

"हाँ, मर जाता है। मगर यहाँ हम लोग उसे खुशनसीब कहते हैं क्योंकि इस शहर पर श्री साँप जी महाराज का राज है। और हर रोज रात को दस आदमी उनके काटे से मर जाते हैं, मेरा मतलब है खुशनसीब बन जाते हैं।"

"तो तुम उस कमबख्त साँप को मार क्यों नहीं देते।"

"हिश्श! क्या बात करते हो!" उस आदमी का चेहरा एकदम पीला पड़ गया और वह यूसुफ, मोहन और शहजादी को छोड़ कर भीड़ में शामिल हो कर सिर पर खाक डाल रोने और चीखने लगा।

भीड़ बढ़ रही थी। लोग जुलूस में शामिल हो के रोते-धोते जाते थे। काले सन्दूक पर काली चादर पड़ी हुई थी। ये सन्दूक बहुत बड़े-बड़े थे। एक सन्दूक को बारह आदमी मिल कर उठाते थे, तब कहीं एक सन्दूक उठता था।

"क्या ये सन्दूक बहुत भारी हैं?" मोहन ने एक आदमी से पूछा।

"हाँ, हर सन्दूक में मरने वाले की सारी दौलत रखी हुई है। अशरफियाँ, सोना, चाँदी, जवाहरात, मकान का किबाला, जमीन की मिल्कियत के कागजात।"

"वह क्यों?"

"यहाँ यह दस्तूर है कि जब कोई साँप, मेरा मतलब है, श्री साँप जी महाराज के काटे से मर जाता है तो सरकारी कानून के हिसाब से उसे काले सन्दूक में डाल दिया जाता है और उसकी सारी दौलत उस सन्दूक में रख कर वह सामने ऊँचा मीनार जो देखते हो ना, वहाँ पहुँचा देते हैं।"

"क्यों?"

"उस मीनार के अन्दर हमारी सरकार रहती है और यह उसका कानून है।"

"अजीब कानून है! मरने वाले के बाद उसकी सारी दौलत भी ले ली जाती है?"

"हाँ! मगर शहर को बचाने के लिए खर्च भी तो कितना होता है?" उस आदमी ने कहा, "यह भी तो सोचो यह मीनार के ऊपर जो रोशनी का गोला है, उसकी बिजली पर ही लाखों रुपया खर्च हो जाते हैं। फिर शहर के ऊपर और चारों तरफ लोहे के तारों का जाल लगाया गया है ताकि साँप यानी श्री साँप जी महाराज अन्दर ना घुस सकें। सारे शहर के दरख्त भी काट डाले गए है ताकि कहीं श्री साँप जी महाराज के छिपने के लिए जगह बाकी ना रहे। तुमने सारे शहर में कोई दरख्त नहीं देखा होगा।।"

"हाँ, बड़ी अजीब बात है।" शहजादी ने कहा, "कोई दरख्त, झाड़ी या फूल तक नजर ना आया!"

"यह सब श्री साँप जी महाराज से बचने के लिए किया गया है। तमाम सड़कें, तमाम मकानात, गलियाँ, कूचे, बाजार, सब पक्के बने हुए हैं। तमाम नालियाँ जमीनदोज (भूमिगत) हैं और उनके मुँह पर लोहे की बारीक जालियाँ लगी हुई हैं। शहर की सरकार ने इस आफत से बचने के लिए हर तरह से इंतजाम कर रखा है। फिर भी हर रोज दस आदमी श्री साँप जी महाराज के काटे से मर जाते हैं।"

"क्या यह साँप किसी को नजर नहीं आता?क्या बात है कि इस कदर रोशनी होते हुए भी आप उस साँप को मार नहीं सकते?" यूसुफ ने हैरान हो कर पूछा।

"हुश्श! ऐसी बात ना करो। वह सुन लेंगे तो तुम्हें भी डस लेंगे।"

उस आदमी के चेहरे पर यकायक जर्दी (पीलापन) फैल गई और वह भी भाग खड़ा हुआ और भीड़ में जाते ही चकरा कर गिर पड़ा और जमीन पर तड़पने लगा। "काट खाया! मुझे भी श्री साँप जी महाराज ने काट खाया!"

लोग जोर-जोर से चिल्लाने लगे। औरतों ने बाल खोल कर अपने सिरों पर खाक डाल कर बैन (रोना-चिल्लाना) करना शुरू कर दिया। यूसुफ, मोहन और शहजादी भाग कर उस आदमी के पास पहुँचे, मगर वह उनके आते-आते ठण्डा हो चुका था। उसके माथे पर डंक का नीला निशान था, मगर साँप का कहीं पता ना था कि वह कहाँ से आया और किधर गायब हो गया। जल्दी से एक काला सन्दूक लाया गया और उस आदमी की लाश को भी उसमें बन्द कर दिया गया यकायक एक जोर की आवाज बादल की तरह गरज कर बोली, "डरो! शहर के वासियो, श्री साँप जी महाराज के कहर से डरो! जो कोई उनकी मुखालिफत करेगा, उसे इस आदमी की तरह मौत

के घाट उतार दिया जाएगा।"

"नहीं, नहीं! हम आपके ताबेदार (हुक्म बजाने वाले) हैं, गुलाम हैं।" मर्द, औरतें, बच्चे सब जमीन पर झुक कर गिड़गिड़ाने लगे।

सिर्फ यूसुफ, मोहन और शहजादी खड़े रहे।

एक आदमी ने कहा, "झुको, झुको! तुम लोग भी झुक जाओ।"

"वाह! हम क्यों झुकें?" यूसुफ ने कहा।

"हम किसी कमबख्त साँप के सामने नहीं झुकते।"

"डरो, डरो!" वह अलौकिक आवाज फिर उधर से आई, "श्री साँप जी महाराज के कहर से डरो।"

लोग जोर-जोर से रोने लगे और सन्दूकों को आगे कर के चलने लगे। जब वे मीनार के करीब आ गए तो एक लोहे के जंगले के पास आ कर रुक गए। यहाँ पर लिखा था :

आगे जाना मना है

लोगों ने काले सन्दूकों को यहीं रख दिया और बाअदब खड़े हो कर मीनार की तरफ देखने लगे। ऊँची मीनार के लोहे के फाटक बन्द के बन्द रहे, मगर मीनार के ऊपर से आवाज आई, "शहरियो! अपने घर लौट जाओ। हम इन लाशों को बिजली से जला देंगे और उनकी दौलत को तुम्हारे फायदे और आराम के लिए खर्च करेंगे। घबराओ नहीं। एक ना एक दिन यह जहर इस शहर से दूर होगा। हम हर तरह की कोशिश करते हैं कि तुम्हें श्री साँप जी महाराज ना डसें। इसके लिए हर एहतियात अमल में लाई जाती है। मगर अफसोस है कि हम अभी तक इसमें कामयाब नहीं हो सके। शायद खुदा की मर्जी ही ऐसी है। और श्री साँप जी महाराज के जहर में किस को दखल है। जाओ मेरे बेटो, वापस जाओ। अपने घरों को लौट जाओ।"

मोहन ने पूछा, "यह किस की आवाज है?"

"यह हमारी सरकार की आवाज है।"

"तो सरकार मीनार के बाहर आकर क्यों बात नहीं करती?"

"श्री साँप जी महाराज के डर से"

"सरकार की शक्ल कैसी है?"

"सरकार को किसी ने नहीं देखा। ना उनके आदमियों को। वे सब लोग मीनार के अन्दर ही रहते हैं और बाहर नहीं आते। उनकी जरूरत की सब चीजें यहीं ला कर रख दी जाती है।"

"जाओ! जाओ, मेरे बेटो! फौरन वापस चले जाओ।"

सब लोग वापस चले गए। सिर्फ यूसुफ, मोहन और शहजादी वहीं खड़े रहे।

मोहन ने यूसुफ से कहा, "चलो, हम भी वापस सराय में चलें।"

यूसुफ ने कहा, "मैं तो सरकार की सूरत देख के जाऊँगा।"

"सरकार की सूरत तो शहर में आज तक किसी ने नहीं देखी। तुम कैसे देखेगे?"

"मैं देखना चाहता हूँ कि ये सन्दूक अन्दर कैसे ले जाते हैं।"

यूसुफ ने एक सन्दूक खोल कर देखना चाहा कि एक गरजदार आवाज आई, "खबरदार जो उन सन्दूकों को हाथ लगाया। वापस जाओ। अजनबियो, वापस जाओ।"

शहजादी ने कहा, "चलो यूसुफ, यहाँ से भाग चलें। मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।"

"और मुझे भी।" यूसुफ ने कहा।

यूसुफ और मोहन और शहजादी तीनों वापस हुए। मगर एक मकान की ओट पाते ही यूसुफ फिर खड़ा हो गया और बोला, "मैं तो यह तमाशा देख कर ही वापस जाऊँगा।"

मोहन और शहजादी ने बहुत समझाया, मगर यूसुफ नहीं माना।

एक घण्टा तक यूसुफ और मोहन और शहजादी मकान की ओट में खड़े मीनार की तरफ देखते रहे, मगर कुछ ना हुआ। मीनार का फाटक बन्द रहा और काले सन्दूक लोहे के जंगले के पास धरे रहे। आखिर डेढ़-दो घण्टे के बाद यकायक मीनार के ऊपर बिजली के गोले की रोशनी बुझ गई और सारे शहर में अँधेरा छा गया। और चारों तरफ से लोगों की चीख-पुकार और हाय-हाय सुनाई देने लगी।

यूसुफ ने शहजादी का हाथ मोहन के हाथ में दे कर कहा, "तुम लोग यहीं खड़े रहो। मैं मीनार के करीब जाकर देखता हूँ क्या बात है?।"

शहजादी ने कहा, "मत जाओ, यूसुफ! मत जाओ।"

यूसुफ ने कहा, "जाना जरूरी है। मेरा ख्याल है, इस वक्त अँधेरा है और वे लोग सन्दूक उठा रहे हैं।"

मोहन ने पूछा, "आखिर इस शहर की सरकार अँधेरे में क्यों काम करती है?"

"इस शहर ही में नहीं, बहुत सी जगहों की सरकारें अँधेरे में काम करती है। और शहरियों की आँख से ओझल रह कर बहुत सी बातें तय कर लेती हैं। हटो मुझे जाने दो।"

चारों तरफ घुप्प अँधेरा था। शहरियों की चीख-पुकारें बन्द हो गई थी। अब चारों तरफ सन्नाटा था। सिर्फ यूसुफ के दौड़ते हुए कदमों की चाप सुनाई दे रही थी। थोड़ी दूर जाकर यह चाप भी बन्द हो गई। फिर थोड़े अंतराल के बाद एक जोर की चीख सुनाई दी। शहजादी खौफ से

मोहन के साथ चिमट गई। यकायक चारों तरफ रोशनी हो गई।

शहजादी और मोहन की आँखें चुँधिया गईं। चन्द लम्हों के बाद जब वे मकान की ओट से बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि मीनार के सामने से काले सन्दूक गायब हैं और लोहे के जंगले के पास जमीन पर यूसुफ की लाश पड़ी है।

"हाय! हाय!" शहजादी और मोहन रोते-रोते यूसुफ की लाश के पास दौड़े-दौड़े गए। शहजादी ने यूसुफ का सिर अपनी गोद में ले लिया। यूसुफ के माथे पर साँप के डंक का नीला निशान मौजूद था। शहजादी जारो-कतार रोने लगी। मोहन भी चीखने-चिल्लाने लगा। उन दोनों

बच्चों को रोते देख कर एक बूढ़ा उनके पास आकर कहने लगा, "क्या बात है, बच्चो! क्यों रोते हो?"

"हमारा साथी मर गया है। उसे साँप ने काट खाया।"

"साँप ने काट खाया"

बूढ़ा मुस्कराने लगा। उसने सब्ज रंग की कबा (लबादा या परिधान) पहन रखी थी। उसके हाथ में एक लकड़ी थी जिसकी मूँठ पर चाँदी के दो पर लगे हुए थे जो हर वक्त फड़फड़ाते हुए मालूम होते थे। ऐसा मालूम होता था कि यह लकड़ी अभी-अभी उस बूढ़े के हाथ से निकल कर खुद-ब-खुद उड़ जाएगी। बूढ़े की दाढ़ी बड़ी और नूरानी थी।

बूढ़े ने मुस्करा कर कहा, "बच्चो, तुम्हारा दोस्त मरा नहीं है, बेहोश है।"

मोहन और शहजादी ने बूढ़े का हाथ पकड़ लिया और बड़ी आजिजी से बोले, "बाबा, किसी तरह से हमारे साथी को अच्छा कर दीजिए।"

बूढ़े ने कहा, "मैं उसे अच्छा नहीं कर सकता हूँ। मैं बूढ़ा हूँ। हां, तुम उसे अच्छा कर सकते हो।" उसने मोहन की तरफ इशारा किया।

"मैं!" मोहन ने पूछा, "वह कैसे?"

बूढ़े ने कहा, "इस साँप के काटे की एक ही दवा है"

"वह किसके पास है?" मोहन ने पूछा।

बूढ़े ने कहा, "तुम दवा ढूँढ़ने जाओगे?"

"जाऊँगा। अपने दोस्त की जान बचाने के लिए मुझे अपनी जान भी देनी पड़े तो जान देकर लाऊँगा।"

"शाबाश बेटे!" बूढ़े ने मोहन की पीठ थपक कर कहा, "अब तुम्हें क्या करना है... तुम्हें इस शहर से बाहर निकल के फिर वापस अपने दरख्त पर जाना होगा।"

"जाऊँगा।"

"वहाँ दरख्त पर एक मील तक चढ़ते जाना। कोई एक मील ऊपर जाकर एक बहुत बड़ी शाख आएगी।"

"बाईं तरफ या दाईं तरफ?"

"बाईं तरफ। उसपर एक बोर्ड लगा होगा। सोतों का शहर। तुम उस डाल पर चलने लगोगे तो कोई दो-ढाई मील जाकर वह डाल खत्म हो जाएगी। जहाँ डाल खत्म होगी, वहाँ तुम्हें एक गुफा मिलेगी। यह गुफा सात मील तक एक पहाड़ के अन्दर चली गई है। जब तुम उस गुफा से

निकलोगे तो तुम एक खूबसूरत वादी में पहुँच जाओगे। सोतों का शहर इसी वादी में है। वहाँ शहर की सबसे बड़ी खानकाह (गिरजाघर) में तुम्हें एक बूढ़ा पादरी मिलेगा जिसके गले में एक सलीब होगी और एक सुनहरी जंजीर में लटकता हुआ लाल (एक कीमती पत्थर) होगा। अगर वह पादरी तुमको यह लाल दे दे तो यूसुफ की जान बच सकती है। क्योंकि इस लाल में यह खासियत हैकि अगर उसे उस जगह लगा दिया जाए जहाँ साँप ने डंक मारा है तो यह लाल साँप का सारा जहर चूस लेता है और आदमी जिन्दा हो जाता है। मगर यह सब काम तीन दिन में हो जाना चाहिए, नहीं तो साँप का जहर चलता हुआ यूसुफ के दिमाग में पहुँच जाएगा और फिर यूसुफ किसी तरह नहीं बच सकेगा।"

"मैं अभी जाता हूँ।" मोहन ने कहा। "मगर यह युसूफ की लाश?"

"तुम घबराओ नहीं। तुम जाना। हम इसे सम्भाल लेंगे। मैं सामने वाले मकान के तहखाने में रहता हूँ। शहजादी मेरे पास रहेगी। तुम लाल ले के वहीं आ जाना।"

जब मोहन चला गया तो बूढ़े ने शहजादी से कहा, "आओ, घर चलें।"

"मगर यूसुफ?"

बूढ़े ने कहा, "इसे यहीं पड़ा रहने दो। वह खुद-बखुद उसकी लाश को उठा कर अन्दर ले जायेंगे।"

"मगर वे तो जला देंगे ना!"

"नहीं! तीन दिन तक नहीं जलायेंगे।"

"आपको कैसे मालूम है?"

"तुम मेरे साथ आओ। सब बताता हूँ। हमारा यहाँ ज्यादा देर तक खड़े रह कर बात करना ठीक नहीं है। सरकार सुन लेगी तो खफा हो जाएगी। और खामखाह शक होगा।"

बूढ़ा शहजादी को ले कर तहखाने में चला गया। वहाँ उसने सन्दूक से एक आईना निकाला।

"यह क्या है?" शहजादी ने पूछा।

"यह जादू का आईना है। इसमें सब कुछ दिखाई देता है।"

बूढ़े ने आईने के दो सिरों पर लगे हुए तार जोड़ दिए। थोड़ी देर तक आईने की सतह पर हरकत पैदा हुई। जैसे पानी में कंकर फेंकने से हरकत पैदा होती होती है। फिर आईना स्थिर हो गया।

शहजादी ने आईना में देखा। मोहन दरख्त पर चढ़ रहा है। फिर उसने देखा मीनार के फाटक खुल गए और मीनार से चार नकाबपोश बाहर निकले और यूसुफ की लाश को लेकर अन्दर चले

गए। फाटक बन्द हो गया। अब कुछ नजर नहीं आता था।

बूढ़े ने आईने का रुख बदला। अब उसे मीनार के अन्दर का नजारा दिखाई दे रहा था। नकाबपोश यूसुफ की लाश को उठा के एक आलीशान दरबार हाल में पहुँचे। वहाँ दरबार में नाच हो रहा था। और एक ऊँचे तख्त पर एक अधेड़ उम्र का आदमी बड़ा ही कीमती लिबास पहने बैठा था। उसने नकाबपोश आदमियों को इशारा किया। नकाबपोश यूसुफ की लाश ले कर बर्फखाने में चले गए। बर्फखाने में ले जाकर उन्होंने यूसुफ के जिस्म को रख दिया और बर्फखाने को ताला लगा के वापस चले गए।

"ये नकाबपोश कौन थे?वह तख्त पर कौन बैठा था?वह नाचने वाली लड़की कौन थी?" शहजादी ने एक ही साँस में बूढ़े से कई सवाल कर डाले।

बूढ़ा मुस्कराने लगा। उसकी छड़ी के पर जोर से फड़फड़ाए। उसने आहिस्ता से कहा, "बेटी! मोहन को आने दो। फिर सब कुछ बता दूँगा।"

उधर मोहन जब दरख्त पर अकेले चढ़ रहा था तो उसे बहुत तकलीफ हो रही थी क्योंकि उसके हाथ में सिर्फ एक अँगूठा था और बाकी उँगलियाँ गायब थी। इस लिए वह बहुत मुश्किल से ऊपर चढ़ रहा था। आज उसकी मदद करने वाला साथी भी उसके साथ ना था। आज सब काम उसे खुद करना पड़ रहा था। मगर उसने हिम्मत ना हारी। वह बड़ी दिलेरी से अँधेरे ही में दरख्त पर ऊपर चढ़ता रहा। उसके हाथ छलनी हो गए। उसके अँगूठों से खून निकलने लगा। फिर भी मोहन ने हिम्मत ना हारी और दरख्त के ऊपर चढ़ता ही रहा। कई बार वह ऊपर चढ़ के नीचे फिसल गया और फिर हिम्मत करके ऊपर चढ़ गया। जब वह तीसरी शाख पर पहुँचा तो उसके सारे जिस्म में खराशें आ गई थी और हाथ और पाँव से खून बह रहा था। एक लम्हे के लिए उसका जी चाहा कि वह वापस लौट जाए। मगर जब उसे यूसुफ की लाश का ख्याल आया तो फौरन उसने अपना इरादा बदल दिया। उसने अपने दाँत भींच लिए और गिरता-पड़ता उस बड़ी डाल पर हो लिया जहाँ से उस बूढ़े के कहने के मुताबिक सोतों के शहर को रास्ता जाता था।

एक मील तक उस डाल पर चलते-चलते मोहन और भी थक गया। इस थकान की वजह से एक जगह उसका पाँव जो फिसला तो वह नीचे लटक गया। अब उसका सारा जिस्म और टाँगें ऊपर थी और हाथ के सिर्फ दो अँगूठों से उसने दरख्त की एक शाख को जोर से पकड़ा हुआ था। उसे मालूम था कि अगर उसके अँगूठों की गिरफ्त से यह शाख भी निकल गई या टूट गई तो फिर वह कई मील नीचे अँधेरे में जा गिरेगा। और फिर शायद उसकी हड्डी-पसली भी ना मिलेगी।

दोबारा डाल पर आने के लिए उसने आहिस्ता से बन्दर की तरह शाख को झुलाना शुरू

किया। आहिस्ता-आहिस्ता वह पेंग बढ़ाता गया हालाँकि इस कोशिश में उसके जिस्म की सारी ताकत खर्च हो रही थी। मगर यहाँ जिन्दगी और मौत का सवाल था। किसी वक्त भी यह शाख टूट सकती थी। मगर इस खतरे की परवाह ना करते हुए मोहन शाख को झुलाता गया और फिर एक ही झटके में छलाँग लगा कर उसने बड़ी डाल को पकड़ना चाहा। मगर कामयाबी ना मिली। वह बदस्तूर हवा में उलटा लटकता रह गया। अब वह क्या करे?मोहन ने इधर-उधर बहुतेरे हाथ मारे, मगर कहीं कोई शाख उसके काबू में ना आई। वह उलटा लटक रहा था और वक्त गुजर रहा था। आखिरकार, बड़ी कोशिश से वह हाथों और जिस्म को सिकोड़ कर ऊपर की तरफ घूमने लगा। इस कोशिश में उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके जिस्म की सारी हड्डियाँ टूट जायेंगी। फिर भी मोहन ने हिम्मत ना हारी। आखिर बड़ी कोशिश से घूम कर और सिकुड़ कर और इधर हो कर दरख्त पर सीधा होने में कामयाब हो गया और उसने अपने हाथ डाल पर टेक दिए। उसका सारा जिस्म पसीने से भीग गया था। पसीना पोंछने के वह अपना हाथ माथे पर ले गया। लेकिन वह चौंक पड़ा... उसके माथे पर अँगूठे के बजाय पाँच उँगलियों वाला हाथ लगा। उसने अपने हाथों की तरफ देखा और वह खुशी से चिल्ला उठा, "आहा! मेरे हाथ पर पाँचों उँगलियाँ उग आईं।"

और वाकई अब मोहन के दोनों हाथों पर पाँच-पाँच उँगलियाँ मौजूद थी। जैसे सभी इंसानों के हाथों में होती हैं। मोहन हैरत और खुशी से अपने हाथों की तरफ देखने लगा। फिर उसने अपने दोनों हाथ चूम लिए। ऐन उस वक्त चारों तरफ हल्की हल्की गुलाबी रोशनी हो गई। उसके हाथ और पाँव में ताकत आ गई और वह उस रोशनी की मदद से डाल पर दौड़ता गया। यहाँ भी वही गुलाबी रोशनी उसे रास्ता दिखा रही थी। यह सात मील का रास्ता भी उसने दौड़ते हुए ही तय किया।

जब वह गुफा के दूसरी तरफ निकला तो उसने देखा कि वह एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर खड़ा है। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं और पहाड़ों से घिरी हुई एक खूबसूरत वादी है। उसकी ढलान पर भेड़-बकरियाँ चर रही हैं। दरख्त फलों से, सेब, नाशपाती, आड़ू और अनारों से लदे हैं। जमीन पर घास मखमल की तरह मुलायम है। धान के खेतों में पानी चाँदी की तरह चमक रहा है और वादी के बीचों-बीच एक खूबसूरत किला खड़ा है। मोहन ने सोचा यही वह सोतों का शहर होगा।

मोहन पहाड़ से नीचे उतरने लगा। रास्ते में एक गडेरिया मिला जो भेड़ें चरा रहा था। मोहन ने उससे पूछा, "क्यों भई! वादी में यह किला और बहुत से मकान नजर आते हैं। क्या यही सोतों का शहर है?"

गडेरिया ने अहिस्ता से सरगोशी में कहा, "ऐं! गों! गों! गो....ओं! क्या कहते हो?"

मोहन ने चिल्ला कर कहा, "मैं पूछता हूँ, सोतों का शहर क्या यही है?"

"आँ! हाँ, या...ही है। खर्र...खर्र।"

गडेरिया अपनी बात कह के फिर दरख्त से टेक लगा के सो गया और खर्राटे लेने लगा। मोहन ने अपने दिल में कहा, "अजीब गडेरिया है यह!"

मोहन आगे चला तो कुछ दूर जा के उसने देखा कि एक पहाड़ी चश्मे के नीचे एक औरत घड़ा रखे बैठी है। करीब जाकर देखा तो मालूम हुआ, वह बैठी नहीं है। बैठी-बैठी सो रही है। घड़ा भरा हुआ है और औरत घड़े को एक हाथ में थामे सो रही है। उसकी आँखें खुली हैं। मगर आँखें जैसे किसी चीज को नहीं देख रही हैं।

मोहन ने कहा, "घड़ा भर गया है। उठो, मैं पानी पी लूँ।"

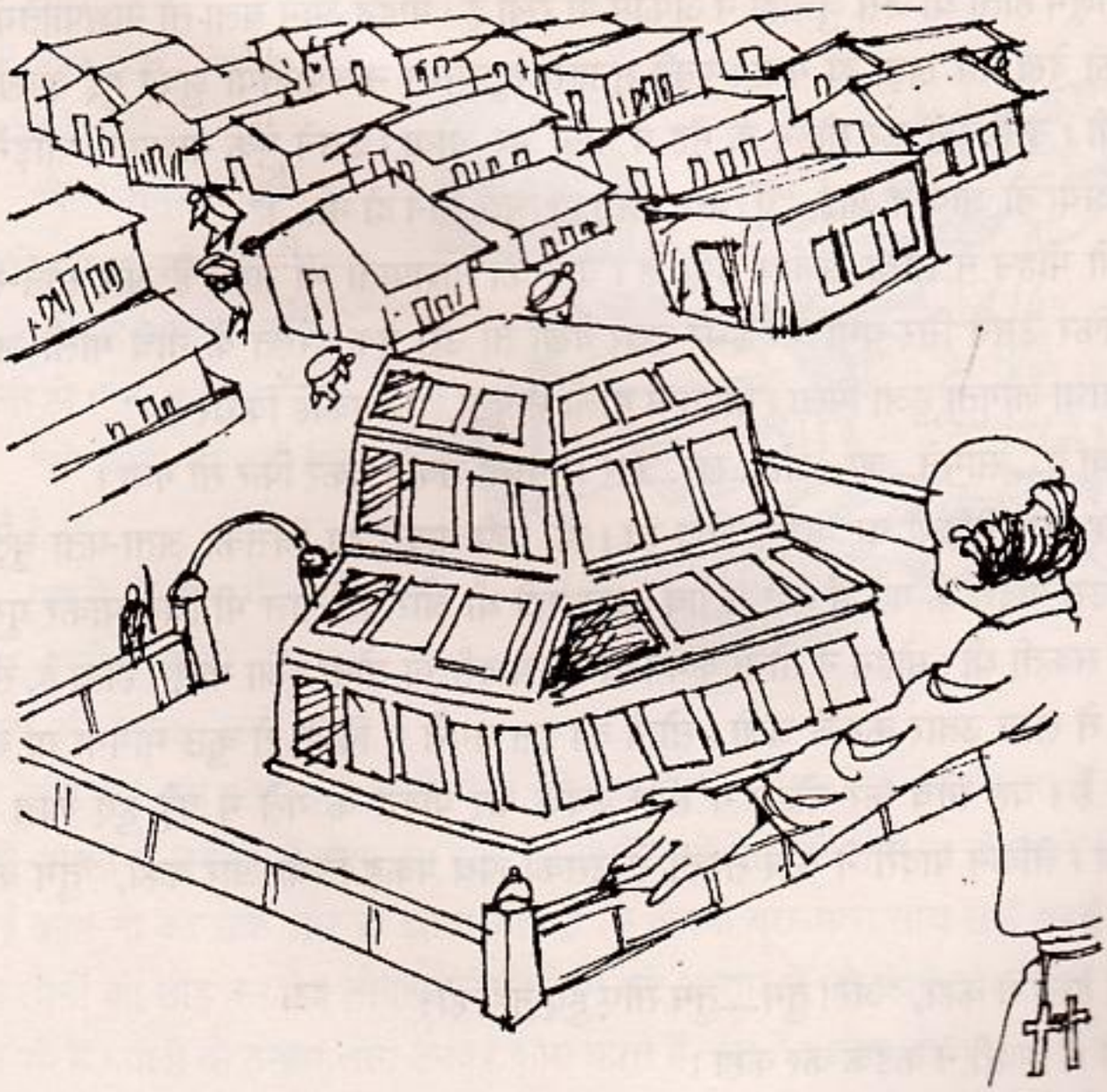

"ऐं?" औरत ने अर्ध-निद्रा के आलम में कहा।

मोहन चिल्लाया, "मैं कहता हूँ घड़ा भर चुका है। उसे परे हटाओ। मैं चश्मे से पानी पिऊँगा।"

औरत आहिस्ता से उठी। आहिस्ता से उसने घड़ा उठाया, अपने सिर पर रखा और नीचे घाटी की ओर चल दी। चलते-चलते भी ऐसा मालूम हो रहा था जैसे वह जागते हुए नहीं, सोते हुए चल रही थी।

मोहन आगे बढ़ा तो उसे दस जुलाहे खड़ियों पर काम करते नजर आए। यहाँ भी वही हालत थी। ताना-बाना चल रहा था। मगर ख्वाब की हालत में जुलाहे के हाथ-पाँव काम करते थे।। कपड़ा भी बुना जा रहा था मगर नींद की हालत में। मोहन ने एक ताने के दो-तीन तागे (धागे) तोड़ दिए तो एक जुलाहे ने बगैर किसी गुस्से के आहिस्ते से कहा,

"क्यों...तंग...कर...ते....हो.....सो....जा....ओ।"

ऐसा मालूम होता था जैसे जुलाहों ने अफीम पी रखी है। मोहन आगे चला तो नाशपातियों के एक झुण्ड को देख कर खड़ा हो गया। पकी सुनहरी खूबसूरत नाशपातियाँ झुकी हुई शाखों से लटक रही थी। उन्हें देख कर मोहन के मुँह में पानी भर आया। उसने एक नाशपाती तोड़ने के लिए हाथ उठाया तो आवाज आई, "ऐं! क्या करते हो?मुझे सोने दो ना...!"

पहले तो मोहन ने सोचा अजीब जगह है। यहाँ की नाशपाती भी सोती हैं और सोते-सोते बोलती हैं। फिर उसने सिर घुमा कर इधर-उधर देखा तो उसे एक दरख्त के नीचे माली आधा सोता और आधा जागता हुआ मिला। मोहन ने माली से पूछा, "खानकाह किधर है?"

"वह क्या है....सामने...जा...ओ....खर्र...खर्र।" माली जवाब देकर फिर सो गया।

खानकाह की सीढ़ियों पर पादरी खड़ा था। हाँ, वही पादरी था जिसका अता-पता बूढ़े ने बताया था। उस पादरी के गले में वही सलीब लटक रही थी और वह लाल भी जिसे पाकर यूसुफ की जान बच सकती थी। मोहन ने सोचा कमबख्त यह पादरी भी सोता हुआ मालूम होता है, सीधे उसकी गर्दन से लाल उतार कर ले चलो। सोतों की इस नगरी में किसी से कुछ माँगना या बात करना बेकार है। यह सोच कर मोहन ने सीधे उचक कर पादरी के गले में पड़े हुए लाल को झटकना चाहा। लेकिन पादरी ने बड़ी सख्ती से उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "तुम कौन हो?क्या बात है?"

मोहन ने हैरत से कहा, "अरे! तुम....तुम सोए हुए नहीं हो!"

"नहीं तो।" पादरी ने कड़क कर कहा।

"माफ कीजिएगा पादरी साहब, मुझसे गलती हो गई। दरअसल, रास्ते में जितने आदमी मिले, सब सो रहे थे। मैंने सोचा आपको भी जगाने की जहमत क्यों करूँ। अपना काम करके चलता बनूँ।"

"तुम्हें क्या काम है बेटे?" पादरी ने बड़ी नरमी से कहा।

अब मोहन ने सारी राम कहानी सुना दी और लाल की जरूरत बयान की। फिर बड़ी मिन्नत-समाजत से कहा, "देखिए पादरी साहब! अगर आप यह लाल नहीं देंगे तो मेरा दोस्त मर जाएगा।"

पादरी ने कहा, "मैं लाल तो दे सकता हूँ, मगर एक शर्त पर..."

"वह क्या है?"

"तुम्हें इस लाल के बदले मुझे मोतियों वाला शंख लाके देना होगा।"

"मोतियों वाला शंख? वह कहाँ मिलेगा? मेरे पास तो है नहीं!"

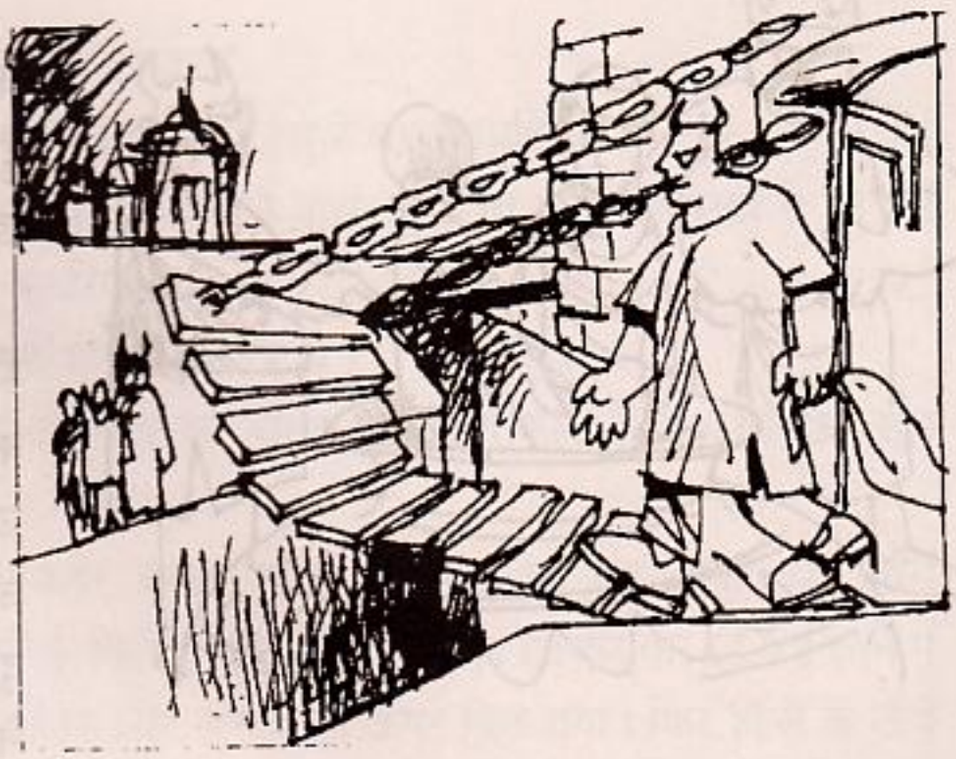

"मैं जानता हूँ वह तुम्हारे पास नहीं है। मगर तुम कोशिश करो तो लाके दे सकते हो।"

"तो जल्दी बताइए शंख कहाँ है?"

पादरी ने हाथ फैला के कहा, "नीचे वादी में वह किला जो है ना, उसमें सात देव रहते हैं। इस वादी पर उन्हीं देवों की हुकूमत है। उन देवों ने इस वादी के लोगों को सोते-जागते के चक्कर में फँसा कर रखा है। यानी सारी वादी के लोग ना तो इतने सोए हुए हैं कि कोई काम ना कर सकें और ना इतना जागे हैं कि अपना बुरा-भला सोच सकें। बस इस हालत में उन लोगों को छोड़ कर देव लोग अपने किले में बड़े आराम से पड़े ऐशो-इशरत की जिन्दगी बसर कर रहे हैं। वादी के तमाम लोग उनका काम करते हैं और देव लोग जो कुछ उन्हें दे देते हैं, खुशी से कबूल कर लेते हैं और काम किए जाते हैं। उन्हें मालूम भी नहीं है कि वे देवों के गुलाम हैं। वे

अब आदमी नहीं रहे, सोई हुई भेड़ें बन चुके हैं। मैं उन्हें नींद से जगाना चाहता हूँ।"

"मगर उस मोतियों वाले शंख से क्या होगा?"

"जिस वक्त वह शंख मेरे हाथ में आ जाएगा और मैं उसे बजने को कहूँगा, तो उसकी आवाज सुनते ही यह सारी वादी और इसके सारे लोग जाग जायेंगे। उस वक्त देवों की हुकूमत खत्म हो जाएगी। शंख की आवाज उन लोगों के लिए जिन्दगी है और देवों के लिए मौत है।"

"वह कैसे?"

"बस, इधर ये लोग जागने शुरू हुए, उधर देव मरने शुरू होंगे। शंख की आवाज सुनकर देवों के कान फट जायेंगे। उनके दिमाग फट जायेंगे और वे मर जायेंगे। और यह वादी आजाद हो जायेगी। इसी लिए तो उन देवों ने उस शंख को इस किले में बड़ी हिफाजत से रखा हुआ है और दिन-रात पहरा देते हैं।" "तो फिर मैं उसे कैसे हासिल कर सकता हूँ?मैं तो एक मामूली सा लड़का हूँ, पादरी साहब!"

"अगर तुम मुझे वह शंख लाके नहीं दोगे तो मैं यह लाल तुम्हें नहीं दूँगा।" पादरी यह कह कर खानकाह के अन्दर घुस गया।

दिन ढलता जा रहा था। शाम हो चुकी थी। मोहन बहुत घबराया। क्या करे और क्या ना करे। अगर उसे लाल अभी मिल जाता तो वह अभी वापस हो सकता था। कल दूसरा दिन शुरू हो जाएगा और बूढ़े ने कहा था कि अगर वह तीन दिनों में वापस आ गया तो यूसुफ की जान बच जाएगी वरना नहीं।

बहुत सोच-विचार के बाद मोहन ने किले के अन्दर घुस कर मोतियों वाला शंख चुराने का फैसला किया।

वह घाटी के नीचे उतर कर शहर की गलियों में घूमता रहा। जब रात का अँधेरा अच्छी तरह से चारों तरफ फैल गया तो उसने किले का रुख किया। किले के चारों तरफ गहरी खन्दक थी जिसमें पानी भरा था। किले के बड़े फाटक के सामने लकड़ी का एक पुल था जो देवों की मर्जी से

खन्दक के आर-पार लगाया जा सकता था। मोहन मौके का मुंतजिर रहा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा शहर के कुछ लोग आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए आए और खन्दक के इस पार आ कर खड़े हो गए। उन लोगों ने अपनी पीठ पर अनाज लादा हुआ था। किसी के हाथ में सब्जियाँ और फल थे। कोई गेहूँ लाया था, और कोई चावल। जुलाहे कपड़े लाए थे और गडेरिए भेड़ें और बकरियाँ। वे लोग खन्दक के इस पार सारा सामान रख कर वापस हो गए। अब वहाँ सिर्फ चार आदमी खड़े थे। दो नौजवान लड़कियाँ और दो नौजवान लड़के। चारों बहुत खूबसूरत थे।

मोहन ने उनसे पूछा, "तुम यहाँ क्यों खड़े हो?"

"हमको खा जाएगा।"

"तुमको खा जाएगा!" मोहन ने हैरत से पूछा।

"हाँ!" एक लड़का बोला, "हम चारों को आज देव लोग खा जायेंगे।"

"और तुम यह बात ऐसे मजे से सोते हुए आहिस्ता-आहिस्ता कह रहे हो जैसे तुम लोग दावत में जा रहे हो!"

"हाँ, दावत ही तो है!" तीसरी लड़की ने कहा।

"मगर...मगर, यह तुम्हारी जिन्दगी का सवाल है। तुम्हें लड़ना चाहिए।"

देवों से कौन लड़ सकता है!" चौथे नौजवान ने कहा, "यह तो हमारी किस्मत है कि हमें खाया जाए। आखिर हम भी तो भेड़-बकरियाँ खाते हैं!"

"लेकिन तुम तो भेड़-बकरियाँ नहीं हो! तुम इंसान हो।"

"तो क्या हुआ?" पहला लड़का रुक-रुक कर बोला, "देव लोग कहते हैं कि इंसान का खून पीने में बहुत मजेदार होता है।"

"मगर...मगर...." मोहन इस कदर चकरा गया कि कुछ ना कह सका। ये चारों लड़के-लड़कियाँ बड़े आराम से खन्दक के किनारे खड़े अपनी मौत का इंतजार कर रहे थे। इतने में किले से एक लकड़ी का पुल नीचे लटका और खन्दक के ऊपर बिछ गया। फिर किले के ऊँचे फाटक खुले और अन्दर से एक देव लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ बाहर आया। मोहन उसे देख कर जल्दी से भेड़ों में घुस गया। देव ने आकर सारे अनाज, सब्जी, फल, चारों नौजवानों, भेड़ों और बकरियों को अपनी बड़ी चादर के एक कोने में बाँध लिया और अपने कन्धे पर डाल कर किले के अन्दर चला गया।

किले के अन्दर जा कर वह सीधा बावर्चीखाने में घुस गया जहाँ बड़े-बड़े चूल्हे जल रहे थे। देव ने अनाज को अलग रखा। सब्जी-तरकारी को अलग रखा। भेड़-बकरियों को अलग रखा और

मोहन को उठा कर चारों नौजवानों के साथ यूँ बाँध दिया जैसे रसोइया साग की एक गड्डी को धागे से बाँध देता है।

"हा! हा! आज हमारी रिआया (प्रजा) ने चार के बजाय पांच इंसान हमारी दावत के लिए भेजे हैं!" देव खुशी से गरजा और बाकी देवों को यह खुशखबरी देने के लिए चला गया।

जब देव चला गया तो मोहन ने बाक़ी साथियों से कहा, "आओ, इस रस्सी को तोड़ डालें और बाहर भाग चलें।"

"भाग कर कहाँ जाएँगे?अपनी किस्मत से भाग कर आदमी कहाँ जा सकता है!" वे चारों बोले।

मोहन रस्सी को तोड़ने की कोशिश करने लगा। इतने में देव बाकी साथियों को ले के आ गया। ये सातों देव मोहन को देख कर बड़े खुश हुए।

"हमारी रिआया समझदार होती जा रही है।" एक देव बोला जिसके सिर पर सफेद सींग उगे थे।

"हाँ, कल से आप उन्हें हुक्म दीजिए कि हर रोज पाँच इंसान हमारे खाने के लिए भेजा करें।" सफेद सींग वाले देव ने काले सींग वाले देव से कहा।

काले सींग वाले देव ने बावर्ची खाने में काम करने वाले देव से कहा, "अब जल्दी से खाना तैयार कर डालो और सबसे पहले इनको पका लो।"

देव ने मोहन और दूसरे साथियों की तरफ इशारा किया।

"बहुत अच्छा!" देव ने रस्सी खोल दी और मोहन और दूसरे सब नौजवानों को साफ करने के लिए एक डोल में डाल दिया और खुद छुरी लेने के लिए किचन के दूसरे कमरे में चला गया।

मोहन ने अपने साथियों से कहा "आओ, यहाँ से भाग चलें। मौत सिर पर मण्डला रही है।"

"अरे भाई! हमें मरने दो ना। आराम से सोने दो ना।" चारों ने बड़े थके हुए लहजे में कहा।

मोहन हिम्मत कर के डोल से जो उछला तो एक मछली की तरह तड़प कर नीचे फर्श पर आ गया और वहाँ से जल्दी से भाग कर बड़े-बड़े बर्तनों की कतार के पीछे से होता हुआ बावर्ची खाने के बाहर चला गया और एक अँधेरी सीढ़ी के पीछे जा के छिप गया।

थोड़ी देर में भाग-दौड़ शुरू हो गई। देव उसे ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे थे। मुख्तलिफ कमरों में सामान उठा के पटका जा रहा था और मोहन सीढ़ी के नीचे छिपा हुआ अपनी जिन्दगी की घड़ियां गिन रहा था। यकायक सीढ़ियों के ऊपर दो देवों की गुफ्तगू सुनाई दी, "आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ!"

"सफेद सींग वाला कहाँ है?"

"वह शंख वाले कमरे के बाहर पहरा दे रहा है।"

"उसे बुलाओ ना। उसकी नाक तो इंसान को फौरन सूँघ लेती है। जरा सी देर में क्या हो जाएगा। शंख तो ताले के अन्दर है!"

"अच्छा बुलाता हूँ।"

एक देव वापस चला गया। दूसरा सीढ़ियों के ऊपर सफेद सींग वाले देव को बुलाने गया।

मोहन जल्दी से कदम उठा के आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ियाँ चढ़ने लगा उसका ख्याल था कि

इस मौके पर देव पलट के नहीं देखेगा। उसका ख्याल ठीक निकला। देव धम-धम करता हुआ सफेद सींग वाले के पास गया जो शंख वाले कमरे के बाहर पहरे दे रहा था।

सफेद सींग वाला देव उस देव को देखते ही बोला, "मानुष गन्ध! मानुष गंध!"

"कहाँ है मानुष गन्ध?" दूसरे देव ने बड़ी सख्ती से चिल्ला कर कहा। "इसी लिए तो मैं आया हूँ कि वह पाँचवां इंसान भाग गया है। तुम चल कर उसे तलाश करो।"

"मगर यह शंख?"

"यहाँ मैं पहरा देता हूँ।"

देव घूमा। मोहन भी उसके पीछे-पीछे घूम गया।

सफेद सींग बोला, "मुझे तुमसे मानुष गन्ध आती है।"

"कहाँ से आती है?मेरी जेब टटोल के देख लो। मैंने किसी इंसान को नहीं छिपा रखा है।"

सफेद सींग उसकी जेब टटोलने लगा। मोहन पीछे से भाग के शंख वाले कमरे के अन्दर चला गया।

जब सफेद सींग को काले सींग की जेब में से कोई इंसान ना मिला तो उसने शंख वाले कमरे को ताला लगाया और चाबी जेब में रख के दूसरे देव को साथ लेकर नीचे बावर्ची खाना में चला गया।

उधर मोहन ने दरवाजा बन्द होते देख कर जरा इत्मीनान का सांस लिया और इधर-उधर

देखा। कमरे के चारों तरफ बड़े-बड़े पिंजरे लटके हुए थे जिनमें गाने वाले खुश-आवाज परिन्दे थे। बुलबुल, मैना, तोते वगैरा अपनी-अपनी बोलियाँ बोल रहे थे। कमरे के बीच में एक बहुत बड़ी मेज पर मखमल के कपड़े के ऊपर शंख जगमग-जगमग कर रहा था। मोहन खुशी से चिल्लाया और जल्दी से भाग कर मेज की तरफ गया। "अब जान बच गई।" मोहन ने सोचा, "मैं इस शंख को उठा कर अभी बजाना शुरू करता हूँ और इसकी आवाज से देव लोगों के दिमाग फट जाएँगे। और फिर सारी वादी बेदार (जाग) हो जाएगी।"

यह सोच कर मोहन ने शंख को हाथ लगाया ही था कि एक आवाज आई, "खबरदार!"

मोहन ने पहले तो इधर-उधर देखा। उसे ख्याल हुआ शायद उसे किसी ने देख लिया है।

थोड़ी देर इधर-उधर देखने के बाद उसने फिर शंख को हाथ लगाया तो फिर आवाज आई, "खबरदार जो मुझे हाथ लगाया।"

मोहन बड़ा हैरान हुआ, "उफ्फोह! तो आप बोलते हैं?"

"हाँ, शंख का काम बोलना है। मैं क्यों ना बोलूँ?"

"मगर आपको तो....मेरा मतलब है लोग शंख को मुँह से बजाते हैं। मगर आप खुद-ब-खुद बोलते हैं!"

"हाँ! मैं खुद-ब-खुद बोलता हूँ।"

"तो चलिए! मैं आपको अपने हाथों में उठाए लेता हूँ। आप बोलना शुरू कीजिए। जोर-जोर से ताकि देवों के कान फट जाएँ।"

"अच्छा, उठाओ मुझे।"

मोहन ने शंख को उठाने की कोशिश की, मगर शंख बहुत भारी था। मोहन से उठाया नहीं गया।

"आप तो बहुत भारी हैं।"

"तो मैं क्या करूँ!"

"तो आप यहीं से चिल्लाना शुरू कर दीजिए।"

"नहीं!" शंख बोला, "जब तक कोई मुझे उठा कर अपने मुँह तक ना ले जाएगा, मैं नहीं चिल्ला सकता।"

"मगर मैं आपको उठा नहीं सकता!" मोहन बोला।

"तो मैं चिल्ला नहीं सकता।"

"आप तो बहुत भारी हैं। शंख तो इतना भारी नहीं होता। सीप का शंख तो बहुत हल्का होता है।" मोहन ने कहा।

"मैं कोई मामूली शंख नहीं हूँ।" शंख ने जवाब दिया। "मैं लोगों को जगाने वाला शंख हूँ मुझे उठाने के लिए ताकत चाहिए।"

"मगर मैं तो एक मामूली लड़का हूँ।" मोहन ने उदासी से कहा, "क्या आपका वजन किसी तरह कम नहीं हो सकता?"

"हो सकता है।" शंख बोला, "मगर इसके लिए तुम्हें फिर से दरख्त पर जाना होगा। और तीन मील ऊपर चढ़कर जब एक बड़ी डाल...."

"बाईं तरफ या दाईं तरफ?" मोहन ने बात काट कर शंख से पूछा।

"दाईं तरफ। तो उस डाली पर तीन मील चल के एक हीरों का जड़ा हुआ दरवाजा आएगा। दरवाजा के अन्दर चले जाना। मगर, खबरदार! दरवाजा को हाथ ना लगाना। अन्दर जाओगे तो दो सौ गज ऊँची सीढ़ी मिलेगी। सीढ़ी के ऊपर चढ़ते जाना। खबरदार! जो सीढ़ियों के दो तरफ की सोने की दीवारों को हाथ लगाया। सीढ़ी चढ़ के तुम्हें एक आलीशान कमरा मिलेगा। इस कमरे की हर चीज सोने की होगी, यहाँ तक कि उस कमरे के अन्दर जो आदमी होगा उसका जिस्म भी सोने का होगा। उस आदमी के पास एक कौआ है जिसकी चोंच में चाँदी की डिब्बिया है। उस डिब्बिया के अन्दर गुलाब का एक फूल है।"

"गुलाब का फूल?"

"हाँ, गुलाब का फूल। और उस गुलाब के फूल में यह खासियत है कि यह फूल कभी नहीं मुरझाता। हमेशा तरो-ताजा और खुशबूदार रहता है। अगर तुम उस आदमी से वह गुलाब का फूल ले आओ और उसको मुझसे छुआ दो तो मैं भी फूल की तरह हल्का हो जाऊँगा। फिर तुम मुझे अपने हाथ में उठा लो और मैं उन जालिम देवों को मार दूँगा।"

"हुश्श! वह दरवाजा खुला।"

मोहन जल्दी से मुड़ा। मगर दरवाजा देव ने खोल लिया था और उसने मोहन को देख लिया था। सफेद सींग वाला खुशी की एक चीख मार कर मोहन को अपनी मुट्ठी में कुचलने ही को था कि शंख ने आहिस्ता से कहा, "देव जी महाराज! उस बच्चे को छोड़ दीजिए।"

"क्यों?"

"यह आपकी वादी का बच्चा नहीं हैं। यह बाहर से आया है। यह सोते इंसानों का बच्चा नहीं है, यह जागते इंसानों का बच्चा है। मैं इससे बातें करूँगा तो मेरा दिल बहला रहेगा। मेरा कहना मानिए तो उसे एक पिंजरे में बन्द कर के मेरे करीब रख दीजिए। मेरा दिल उससे बातें करने को चाहता है।"

"मगर मेरा दिल उसे खाने को चाहता है।"

"जब मेरा दिल उससे बातें करके भर जाएगा तब आप उसे खा लीजिएगा।"

"हाँ, यह ठीक है।"

देव ने मोहन को एक बड़े पिंजरे में इस तरह बन्द कर दिया जिस तरह लोग किसी तोते या मैना को पिंजरा में बन्द करते हैं। फिर उसे शंख के सामने रख दिया और दरवाजा बन्द कर के ताला लगा के चला गया।

जब दूसरा दिन गुजर गया और मोहन नहीं आया तो शहजादी बहुत परेशान हुई और बूढ़े से

कहने लगी, "जरा जादू के आईने में देखो, मोहन कहाँ है?"

बूढ़े ने आईने के तार जोड़े। आईने की सतह पहले तो बेहद गन्दली हो गई। जैसे चारों तरफ तूफान छा रहा हो। थोड़ी देर बाद सतह खुद-ब-खुद साफ हो गई। अब आईने में एक पिंजरा लटका हुआ नजर आ रहा था। इस पिंजरे में मोहन बन्द था।

"मोहन!" शहजादी जोर से चिल्लाई।

मोहन ने पिंजरे से एक हाथ निकाल कर कहा, "शहजादी, मुझे बचाओ।"

शहजादी ने मोहन का हाथ पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो हाथ लगाते ही अँधेरा छा गया और मोहन आईने की सतह से गायब हो गया।

शहजादी मायूस हो कर बूढ़े की तरफ पलटी और रो-रो कर बोली, "मैं आपके पाँव पड़ती हूँ, मोहन को किसी तरह बचा लीजिए।"

बूढ़े ने कहा, "मोहन एक ही सूरत में बच सकता है।"

"वह किस तरह?"

"अगर कोई सोतों के शहर के देवों को मार दे और मोहन को पिंजरे से निकाल ले।" बूढ़े ने कहा।

"उन देवों को मारने की क्या सूरत हो सकती है?" शहजादी ने पूछा।

"उन देवों की जान एक पहाड़ी कौए में है और उस कौअे का पिंजरा सोतों के शहर से सौ मील दूर एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर एक बहुत बड़े किले के अन्दर लटका हुआ हैं। अगर कोई उस कौअे की चोंच में दबी हुई चाँदी की डिबिया खोल के उसमें से गुलाब का फूल निकाल ले और कौए को मार दे तो सोतों के शहर के सारे देव मर जायेंगे। फिर अगर गुलाब के फूल को मोतियों के शंख के ऊपर रख दिया जायेगा तो मोहन का पिंजरा खुद-ब-खुद खुल जायेगा। और मोतियों का शंख फूल की तरह हल्का हो जायेगा। फिर वह शंख आसानी से उठा कर पादरी को दिया जा सकता है और पादरी से उसके गले का लाल ले कर यूसुफ की जान बचाई जा सकती है।"

शहजादी रोने लगी और बोली, "यह सब कुछ एक दिन में तो क्या एक हफ्ते में भी नहीं हो सकता।"

बूढ़े ने उसे हिम्मत दिलाई और बोला, "अगर तू कोई शहजादी है तो वाकई इस काम को नहीं कर सकती। लेकिन अगर तू डबलरोटी वाले की लड़की है तो इस काम को जरूर कर सकती है।"

शहजादी बोली, "मैं सचमुच डबलरोटी वाले की लड़की हूँ।"

"तो मेरी छड़ी ले जा।" बूढ़े ने अपनी परों वाली छड़ी उसके हाथ में दे कर कहा, "इस वक्त पैदल चलने से काम ना होगा। इस छड़ी पर घोड़े की तरह सवारी की जा सकती है। जितनी देर तक तू इसके परों पर हाथ रखे रहेगी, यह छड़ी हवा में उड़ती चली जाएगी। जब उसके परों पर से हाथ उठा लेगी तो यह खुद-बखुद हवा में उड़ना बन्द कर देगी और जमीन पर उतर आएगी।"

शहजादी ने छड़ी पर सवार हो कर कहा, "चल, मुझे पहाड़ी कौए के पिंजरे के पास ले चल।"

इतना सुनते ही छड़ी के पर जोर-जोर से फड़फड़ाने लगे। चंद लम्हों के बाद शहजादी हवा में उड़ी चली जा रही थी। उलटे दरख्त की शाखें मीलों तक उसकी निगाह के नीचे फिसलती जा रही थी। कुछ अर्से के बाद छड़ी एक तरफ को मुड़ गयी। अब छड़ी एक गहरी गुफा में से गुजर रही थी। शहजादी को बहुत डर लगा। मगर वह मजबूती से छड़ी के परों पर हाथ रखे बैठी रही।

थोड़ी देर बाद छड़ी सोतों के शहर की वादी के ऊपर उड़ रही थी। ऊपर और ऊपर, छड़ी बादलों में गायब हो गयी। अब चारों तरफ धुँध ही धुँध थी। बादल इधर-उधर जाते, अरना भैंसों की तरह एक-दूसरे से टकरा जाते। बिजली की कड़क पैदा होती। बादल गरजने लगते। शहजादी के सारे कपड़े पानी से सराबोर हो गए, मगर शहजादी बहुत ही मजबूती से छड़ी के परों पर हाथ रखे बैठी रही। आखिर छड़ी बादलों से भी ऊँचा उड़ने लगी।

फिर शहजादी ने देखा कि बादलों से भी ऊँचा एक पहाड़ है। इस पहाड़ पर ना कहीं कोई दरख्त है, ना घास है और ना झाड़ियाँ। बस चारों तरफ बर्फ ही बर्फ पड़ी है। और बड़ी-बड़ी चट्टानों के ऊपर कहीं-कहीं आदमियों की हड्डियाँ और पंजर बिखरे पड़े हैं। और यह पंजर पहाड़ की ढलान से ले कर उसकी चोटी तक बिखरे पड़े थे।

छड़ी पहाड़ की चोटी की तरफ बढ़ रही थी। पहाड़ की चोटी पर एक खूबसूरत किला था जो कदरे सोने की तरह चमकता नजर आता था। जब शहजादी किले के करीब पहुँची तो उसने देखा कि वाकई किला सोने का बना हुआ है। ईंटें, दीवारें और दरवाजे, सीढ़ियाँ, खिड़कियों, हर चीज सोने की बनी हुई थी।

सबसे ऊँचे बुर्ज पर सुनहरी तार के पर्दे सरसरा रहे थे। इस बुर्ज की छत से एक सुनहरी जंजीर लटक रही थी। इस जंजीर से एक पिंजरा लटक रहा था। इस पिंजरे में एक कौआ अपनी चोंच में चाँदी की एक छोटी सी डिब्बिया दबाए बैठा था। बुर्ज की फर्श पर चारों तरफ खौफनाक शेर मुँह खोले बैठे थे। शहजादी को देख कर दहाड़ने लगे।

शहजादी ने डरते हुए कहा, "छड़ी, ऊपर उड़ो।"

छड़ी किले के बिल्कुल ऊपर उड़ने लगी।

शहजादी कुछ सोचने लगी। थोड़ी देर के बाद शहजादी ने छड़ी से कहा, "मुझे किले के दरवाजे पर ले चलो।"

छड़ी चक्कर काटती हुई नीचे उतरने लगी। जब वह किले के दरवाजे पर पहुँची तो शहजादी ने परों पर से हाथ हटा लिया। छड़ी एकदम किले की सीढ़ियों पर रुक गयी और शहजादी ठोकर खाते-खाते बची। छड़ी को हाथ में ले कर शहजादी सीढ़ियाँ चढ़ती हुई किले के दरवाजे पर आई। उसने देखा कि दरवाजा बिल्कुल खुला हुआ था।

शहजादी किले के अन्दर दाखिल हो कर इधर-उधर देखने लगी। कहीं कोई आदमी नजर नहीं आया।

"कोई है?कोई है?" शहजादी की आवाज गुम्बद से टकरा के वापस आई। फिर चारों तरफ सन्नाटा छा गया।

शहजादी डरते-डरते आगे बढ़ी। बड़े हाल से गुजर कर ऊँची सीढ़ियों की एक कतार आती थी जिसके ऊपर बहुत से इंसानों के पंजर पड़े थे। शहजादी ये सीढ़ियाँ भी चढ़ गई। सीढ़ियों के ऊपर का दरवाजा बन्द था। शहजादी ने हाथ से जोर लगा के दरवाज़ा खोलना चाहा, मगर दरवाजा नहीं खुला। उसकी इसी कोशिश में अचानक शहजादी की छड़ी दरवाजे को छू गयी। छड़ी के छूते ही दरवाजा 'चर्ररर...' कर के खुद-बखुद खुलने लगा।

शहजादी आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर दाखिल हुई। यह एक बहुत बड़ा आलीशान कमरा था। छत पर हीरे-जवाहरात के फानूस लटक रहे थे। सोने की दीवारों में खुशनुमा कटी हुई बारीक-बारीक सोने की जालियाँ थी। उनसे धीमी-धीमी रोशनी छन-छन के आ रही थी। शहजादी के कदम एक बहुत ही खूबसूरत दरवाजे पर आकर रुक गए जो सालिम (पूरी तरह) नीलम का बना हुआ था। शहजादी ने देखा कि कमरे में कोई नहीं है।

शहजादी ने चिल्ला के कहा, "कोई है...?"

"कोई है?कोई है?" शहजादी की आवाज गुम्बद से टकरा कर लौट आई।

फिर थोड़ी देर के बाद चारों ताफ कहकहों की आवाज आने लगी। "हा..हा! हा..हा! किसको ढूँढती हो?हाहाहा! कोई है?अरे भई! यहाँ सब कोई हैं। तुम किसको ढूँढ़ती हो?हा..हा..हा। अन्दर आ जाओ।"

शहजादी डरते-डरते दरवाजे के अन्दर दाखिल हुई।

इस कमरे में एक पूरा दरख्त सोने का बना हुआ था। उसकी शाखों में जवाहरात जगमग-जगमग कर रहे थे। सोने की दीवारों में जाले लगे थे, मगर वह भी सोने के थे। जमीन पर

मिट्टी पड़ी थी। मेज, कुर्सियाँ, गुलदान हर चीज सोने की थी। मगर गर्द से अटी पड़ी थी। शहजादी ने हाथ लगा के देखा। यह गर्द भी सोने की थी!

एक सुनहरे बिस्तर पर एक लड़की लेटी हुई थी। उसके बाल सुनहरी, रुखसार सुनहरी, होंठों की चमक सुनहरी। सिर से पैर तक सोने की मूरत मालूम होती थी। वह चुपचाप सोई पड़ी थी।

शहजादी ने उसे जगाना चाहा। मगर जब झिंझोड़ने के लिए हाथ लगाया तो उसे यह जान कर बड़ी हैरत हुई कि वह लड़की सारी की सारी सोने की थी। उस लड़की के बिस्तर के करीब ही एक आराम कुर्सी पड़ी थी। उसपर एक बूढ़ा आदमी लेटा था। शहजादी ने चिल्ला के कहा, "बापू!"

मगर नहीं। यह उसका बाप नहीं था, हालाँकि पहले पहल उसे अपना बाप मालूम हुआ।

शहजादी ने एक कदम आगे बढ़ाया तो उसे यह बुड्ढा जौहरी मालूम हुआ।

"जौहरी!" शहजादी चिल्लाई और पीछे हटी क्योंकि अब उसे उस बुड्ढे के चेहरे में अपना नीलाम करने वाले जालिम आदमी का चेहरा दिखाई दे रहा था।

"जालिम! जालिम!" शहजादी डर के मारे पीछे हट के चीखी।

"घबराओ नहीं।" किसी ने करीब से हँस के कहा, "यह आदमी तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। यह तो सारे का सारा सोने का बना हुआ है।"

शहजादी ने पलट के इधर-उधर देखा। मगर उसे कहीं पर कोई आदमी नजर ना आया।

शहजादी ने चिल्ला के कहा, "तुम कौन हो?कहाँ छिपे खड़े हो?सामने आ कर बात करो।"

"मैं यहाँ तुम्हारे सामने तो बैठा हूँ!"

"कहां?" शहजादी ने तुरन्त पूछा।

"यहाँ! तुम्हारे सामने।" आवाज आई।

मगर शहजादी के सामने तो कुछ भी नहीं था। बस उसके करीब ही एक सुनहरी तिपाई पर एक सितार रखा था जिसके तार खुद-बखुद हिलते हुए मालूम होते थे।

"क्या तुम बोलते हो!" शहजादी ने हैरत से पूछा।

"हाँ! मैं ही बोलने वाला सितार हूँ।" सितार ने झुँझला कर कहा।

"तो यह सब माजरा क्या है भाई?"

सितार ने हँस कर कहा, "सितार कभी भाई हो सकता है! मैं तो एक बेजान सितार हूँ।"

"मगर यह लड़की कौन है?" शहजादी ने जल्दी से पूछा।

"यह लड़की उस बूढ़े की बेटी है।"

"यह तो सोने की है! इसको क्या हुआ?"

"इस किले के अन्दर की हर चीज सोने की है। मुर्गियाँ सोने की हैं और सोने के अण्डे देती हैं। फौवारे सोने के हैं और सोने का पानी उछालते हैं। दरख्त, फल, फूल, पत्ते—यहाँ हर चीज सोने की है। हद तो यह है कि अगर तुम इस कमरे के अन्दर रोटी पकाओगी तो वह भी तवे पर तप कर सोने की हो जाएगी।"

शहजादी आगे बढ़ी। सितार ने चिन्ला के कहा, "हाथ लगाओगी तो सोने की हो जाओगी।"

शहजादी पीछे हट गई और बोली, "मगर यह आदमी जिन्दा है। उसका दिल हरकत कर रहा है।"

"हाँ!" सितार ने कहा, "उसका सारा जिस्म सोने का हो चुका है। मगर दिल चूँकि सोने का नहीं हुआ, इस लिए यह आदमी अभी जिन्दा है।"

"उसका दिल क्यों सोने का नहीं हुआ?" शहजादी ने फिर सवाल किया।

"पहले-पहल तो उसे सोने से बड़ी मुहब्बत थी। हर चीज को हाथ से छू कर उसे सोना कर दिया करता था। चुनांचे मैं भी किसी जमाने में मामूली लकड़ी का सितार था। अब सोने का हूँ। और बहुत भारी हो गया हूँ। बातें करते-करते तार दुखने लगते हैं। हां, तो मैं क्या कह रहा था?"

"तुम यही कह रहे थे कि यह आदमी बड़ा जालिम था और अपने पारस पत्थर से हर चीज को सोना कर दिया करता था।"

"हाँ, लेकिन एक दिन जब उसने गलती से अपनी बेटी को अपने पारस पत्थर से छू लिया और उसकी बेटी सोने की हो गई तो उस आदमी को सोने से नफरत हो गई। उसने हजार कोशिश की कि सोने की बनी हुई बेटी फिर से जिन्दा गोश्त-पोस्त की लड़की बन जाए, मगर उसे कामयाबी नहीं हुई। क्योंकि किसी चीज को सोने में तब्दील करना आसान है, मगर सोने को गोश्त में तब्दील करना बिल्कुल नामुमकिन है। चुनांचे जब यह अपनी बेटी को दोबारा जिंदा करने में कामयाब ना हुआ तो उसने अपने-बाप को भी पारस पत्थर से छू लिया और सोना हो गया। मगर चूँकि उसके दिल में सोने से नफरत पैदा हो चुकी थी। इस लिए दिल अभी तक अन्दर से गोश्त का है और हर दम धड़कता है। हा! अब तुम तो बताओ कि तुम क्यों यहाँ आई हो। क्या पारस पत्थर की तलाश में?रास्ते में क्या हजारों लालची आदमियों के पंजर नहीं देखे जो इसी पारस पत्थर की तलाश में चल कर यहाँ पहुँचे और इस कोशिश में मर गए।"

"देखे हैं।" शहजादी ने कहा, "मगर मुझे तुम्हारा पारस पत्थर नहीं चाहिए। मुझे पहाड़ी कौआ चाहिए।"

"पहाड़ी कौअे पर तो शेरों का पहरा है। और ये शेर सिर्फ इसी बुड्ढे का कहा मानते हैं जो इस कुर्सी पर तुम्हारे सामने बेहोश लेटा है। पहाड़ी कौये को पकड़ने की कोई सूरत नहीं हो सकती। बस एक सूरत हो सकती है।"

"वह क्या?" शहजादी ने जल्दी से कहा।

"यहाँ आस-पास कहीं से तुम पानी ला सकती हो?"

"पानी! पानी की पहाड़ों पर क्या कमी हो सकती है।" शहजादी बोली, "मैं ने रास्ते में चट्टानों पर चारों तरफ बर्फ ही बर्फ देखी है।"

"बेवकूफ! वह तो सोने की बर्फ है। इस पहाड़ पर जितने चश्मे हैं, वे सब के सब सोने के हैं। उनमें से पानी के बजाय सोना पिघल कर बहता है। इस पहाड़ पर सब कुछ है, मगर पानी नहीं है।"

"पानी को ले कर क्या करोगे?"

"अगर तुम कहीं से पानी ले आओ...बस सादा पानी, और उसे इस आदमी पर और उसकी बेटी पर छिड़क दो तो ये दोनों फिर से जिंदा हो जाएंगे। अपने सोने के जिस्म को छोड़ कर फिर से गोश्त-पोस्त के इंसान बन जाएँगे। फिर तुम उस बुड्ढे से पहाड़ी कौआ माँग सकती हो क्योंकि तुम उसकी जान बचाओगी इसलिए यह तुम्हें पहाड़ी कौआ जरूर देगा।"

"तुम क्यों इस बुड्ढे की इतनी तरफदारी करते हो?" शहजादी बोली।

"इस लिए कि यह अपनी गलती तस्लीम कर चुका है। इसे काफी सजा मिल चुकी है और मैं एक रहमदिल सितार हूँ। और मैं फिर से गाना चाहता हूँ। एक जमाना था जब मैं लकड़ी का था। और यह खूबसूरत लड़की अपनी प्यारी-प्यारी उँगलियाँ मेरे सीने पर फेर के ऐसे-ऐसे खूबसूरत राग गाया करती थी कि क्या बताऊँ! मैं उन दिनों को फिर से वापस लाना चाहता हूँ जब मेरे सीने से नग्मे फूट कर निकलते थे। अब मैं बोल सकता हूँ, गा नहीं सकता।"

"गा क्यों नहीं सकते?"

"गाने के लिए खूबसूरत उँगलियों की जरूरत होती है। इंसान की जिंदा उंगलियों की। और इस जिन्दगी के लिए सोने की नहीं, सिर्फ सादे पानी की जरूरत है। क्या तुम कहीं से पानी नहीं ला सकती?अगर तुम पानी ले आओ, तो मैं तुम्हें उसके बदले पारस पत्थर, सोने के उबलते चश्मे, सोने की मुर्गी, यह सारा सोने का किला दे सकता हूँ।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिए।" शहजादी ने कहा, "मैं सिर्फ पहाड़ी कौआ चाहती हूँ।"

शहजादी छड़ी पर सवार हो गई और उसके परों पर हाथ रख के बोली, "जल्दी से किसी सादे पानी के चश्मा पर ले चलो।"

छड़ी के पर फड़फड़ाए। चन्द लम्हों में छड़ी फिर से हवा में परवाज कर रही थी। थोड़ी ही देर में उस सुनहरी पहाड़ की घाटियों से नीचे फिसलती चली गयी। फिर अँधेरे में सफर करने लगी। फिर घूम-घूम कर बादलों का चक्कर खाती हुई यकायक एक सरसब्ज हरी-भरी वादी में जा उतरी, जहाँ लम्बी-लम्बी घास उगी थी और घाटियों पर सब्जपोश दरख्त खड़े थे और दो चट्टानों को चीर कर एक खूबसूरत झरना नीचे वादी में गिर रहा था।

इस झरने के नीचे बहुत सी औरतें घड़ों में पानी भर रही थी। शहजादी ने जल्दी से पानी की भरी हुई एक घड़िया उठाई और इसके पहले कि घड़िया की मालिक औरत चिल्ला सकती, वह छड़ी पर सवार हो के उड़ गई। औरतें हैरत से देखने लगीं। बल्कि कई एक गश खा के गिर पड़ीं। शहजादी छड़ी पर सवार हो कर वापस किले में पहुँची। रास्ते में जहाँ-जहाँ वह इंसानी पंजरों पर पानी छिड़कती गई, वहाँ-वहाँ मुर्दे जिन्दा हो कर उसका शुक्रिया अदा करने लगते।

किले के अन्दर पहुँच कर उसने सबसे पहले बूढ़े पर पानी छिड़का। बुड्ढा फिर से गोश्त-पोस्त का बन गया। शहजादी ने फिर जल्दी से बुड्ढे की खूबसूरत बेटी पर पानी छिड़का। वह भी जिंदा हो गई और अपने बाप से बगलगीर होने के लिए आगे बढ़ी। लेकिन ऐन उसी वक्त किसी ने जोर से कहा, "खबरदार! आगे ना बढ़ना। उसके हाथ में अभी तक पारस पत्थर है।" यह सितार बोल रहा था।

बुड्ढे ने जल्दी से अपने हाथ से पारस पत्थर की अँगूठी उतार के किले के बाहर फेंक दी और दोनों हाथ बढ़ाए अपनी बेटी से बगलगीर हुआ। बाप-बेटी दोनों ने शहजादी का शुक्रिया अदा किया। और जब शहजादी ने अपना मतलब जाहिर किया तो बुड्ढे ने बड़ी खुशी से उसकी दरखास्त कबूल कर ली। वह खुद ऊपर के बुर्ज में जा के अपने सधाए हुए शेरों के बीच में से पहाड़ी कौअे का पिंजरा उठा लाने के लिए रवाना हुआ। ऐन इसी वक्त किसी ने कहा, "और हमें यहीं छोड़े जाने लगे?सच है इंसान बड़ा नाशुक्रा होता है।"

शहजादी ने पलट कर सितार की तरफ देखा और फिर उसपर भी पानी छिड़क दिया। सोने का सितार फिर से लकड़ी का सितार बन गया। और बुड्ढे की बेटी ने अपने सितार को पहचान कर अपने गले से लगा लिया। टपटप उसकी आँखों से आँसू बह निकले और सितार के तारों पर बहने लगे और फिर उन तारों से ऐसा खूबसूरत राग निकलने लगा कि किले का हर दरख्त फिर से हरा-भरा हो गया। और जहाँ सोने के पत्ते थे, वहाँ हरी-हरी पत्तियों निकल आईं। और जहाँ सोने के फूल थे, वहाँ नाजुक पँखुड़ियों वाले फूल महक उठे। और जहाँ नंगी चट्टानें थीं, वहाँ घास निकल आई। और जहाँ सोने के तपते हुए चश्मे उबलते थे, वहाँ ठण्डा मीठा पानी कल-कल करता हुआ जमीनों को तर करने लगा।

सोने की वादी में फिर से बहार आ गई।

ऊपर के बुर्ज में जा कर बुड्ढे ने इस हरे-भरे मंजर को देख कर शहजादी से कहा, "हाँ, तुम अब पहाड़ी कौआ ले जा सकती हो।"

"इस पहाड़ी कौए में और क्या खास बात है?"

"इस पहाड़ी कौए की आँखों में पुतलियों की बजाय पारस पत्थर है। इस कौए के मर जाने के बाद पारस पत्थर दुनिया से लुप्त हो जाएगा।"

बुड्ढे ने सुनहरी जंजीर से पिंजरा खोल कर शहजादी के हाथ में थमा दिया। शहजादी छड़ी पर सवार हो कर चन्द लम्हों में सोतों के शहर में पहुँच गई। छड़ी देवों के किले की ऊँची-ऊँची दीवारों के ऊपर से उड़ती हुई सीधी किले के अन्दर जा उतरी। किले के अन्दर पहुँचते ही देव "मानुष

गन्ध! मानुष गन्ध!" कहते हुए चीखते-चिल्लाते शहजादी की तरफ बढ़े।

शहजादी ने जल्दी से पिंजरा खोल के कौअे की चोंच से चाँदी की डिब्बिया निकाल के अपने पास रख ली और कौए के दोनों पर नोच कर फेंक दिए।

परों का नोचना था कि देवों के दोनों बाजू कट के अलग गिर पड़े। जोर से चिल्लते हुए खौफनाक दहाड़ें मारते हुए वे शहजादी की तरफ लपके। शहजादी ने कौए की दोनों आँखें फोड़ दीं। पहाड़ी कौए की आँखें फूटते ही देव बिल्कुल अन्धे हो गए। अब उन्हें शहजादी नजर ना आती थी। और वे अँधेरे में इधर-उधर पागलों की तरह दौड़ने लगे।

एक देव जिसके नथुनों में आदमी को सूँघने की ताकत सबसे ज्यादा थी गिरता-पड़ता किसी ना किसी तरह शहजादी के करीब पहुँच गया। शहजादी के करीब पहुँच के उसने अपना पाँव शहजादी के जिस्म के ऊपर रखना चाहा। मगर उसी वक्त शहजादी ने बड़ी फुर्ती से काम लिया और जल्दी से पलट कर घूम गई। उसने जल्दी से कौए को टाँगों से पकड़ा और उसे बीच से चीर डाला। कौए को चीरते ही चारों तरफ से बादलों की कड़क और गरज पैदा हुई। जमीन ऐसे काँप उठी जैसे भूचाल आ गया हो।

किले के बुर्ज टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़े और शहजादी भी जलजले के धक्के से बेहोश हो कर गिर पड़ी।

थोड़ी देर के बाद जब उसे होश आया तो क्या देखती है कि ना तो वह किला है, ना वे देव। ना वह बुर्ज है, और ना खंदक। एक सर-सब्ज विस्तृत मैदान है जिसमें मखमल की तरह नरमो-मुलायम घास गलीचे की तरह बिछी हुई है। और रंग-रंग के फूल अपनी बहार दिखा रहे हैं इस मैदान के बीच में एक मेज रखी है और उस मेज पर वह मोतियों वाला शंख रखा है। और उसके करीब एक पिंजरा पड़ा है जिसमें मोहन बन्द है।

मोहन को देखते ही शहजादी बेअख्तियार उसकी तरफ दौड़ी और जल्दी से पिंजरा खोल के उसे आजाद किया।

फिर उसने चाँदी की डिब्बिया से गुलाब का फूल निकाला और उसे शंख पर रख दिया।

शंख पर रखते ही गुलाब का फूल गायब हो गया और शंख फूलों की तरह हल्का हो गया। मोहन ने उसे अपने हाथों में उठा लिया और छड़ी पर सवार हो कर दोनों पादरी के पास चले गए और उसके हाथ में शंख दे दिया।

पादरी शंख को ले कर बहुत खुश हुआ। उसने शंख से कहा, "उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो।"

मगर शंख खामोश रहा।

पादरी ने गुस्से से मोहन की तरफ देखा और कहा, "तुमने मुझसे धोखा किया है। यह असली मोतियों वाला शंख नहीं है। तुम कोई दूसरा जाली शंख उठा लाए हो।"

मोहन ने कहा, "नहीं, वहीं शंख है।"

"तो फिर यह बोलता क्यों नहीं?" पादरी ने पूछा।

मोहन ने उलट-पलट के देखा। बिल्कुल वहीं शंख था। उसने शंख से पूछा, "तुम बोलते क्यों नहीं?"

मगर शंख फिर भी नहीं बोला।

पादरी ने गुस्से से कहा, "जाओ, तुम्हें लाल नहीं मिलेगा।"

शहजादी ने शंख मोहन के हाथ से छीन कर अपने होंटों से लगा लिया। फिर जोर से शंख को फूंका।

यकायक शंख जोर-जोर से गाने लगा:

"उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो!"

उसकी आवाज सारी वादी में गूँज उठी। और जहाँ-जहाँ लोग सोए पड़े थे, या अर्ध-निद्रा में थे, या आधे जगे थे, वहाँ-वहाँ सब लोग यह आवाज सुन कर जागते गए। खुशी से उनकी आँखों में आँसू आ गए। आज बरसों के बाद वे जागे थे और अपने दोस्तों-अजीजों को पहचान रहे थे और उनके गले मिल रहे थे। सारी वादी में बहार आ गई थी। और शंख जोर-जोर से गा रहा था :

"उठो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो!"

पादरी ने खुशी से शंख को कलेजे से लगा लिया और बोला, "मैं समझ गया। अब यह देवों का शंख नहीं है। यह इंसान का शंख है। यह खुद नहीं बोलेगा। इसमें इंसान की साँस और उसकी मेहनत बोलेगी।"

पादरी ने मोहन और शहजादी की तरफ देखा और गर्दन झुका के अपने गले का लाल उतार के उनके हवाले कर दिया। शहजादी और मोहन छड़ी पर सवार हो कर उसी दम वापस हुए, क्योंकि वक्त बहुत कम था और सूरज मगरिब (पश्चिम) को जा रहा था।

थोड़ी देर के बाद मोहन और शहजादी उड़ते हुए छड़ी की मदद से सब्ज कबा वाले बूढ़े के पास साँपों के शहर में पहुँच गए। सूरज अभी अस्त नहीं हुआ था। लेकिन मगरिब की तरफ देख कर अंदाजा होता था कि कोई आध घण्टे में अस्त हो जाएगा। बूढ़े ने लाल हाथ में ले कर कहा, "वक्त बहुत कम है। मगर चलो चलते हैं। इक आखिरी कोशिश कर के देख लेते हैं।"

बूढ़े ने छड़ी हाथ में ली और मोहन और शहजादी को साथ ले के बुलन्द मीनार की तरफ रवाना हुए जहाँ साँपों के शहर की सरकार रहती थी।

रास्ते में बूढ़े ने मोहन और शहजादी से कहा, "मीनार के अन्दर घुसने की सिर्फ एक तरकीब है। इसे अच्छी तरह समझ लो। इसमें अगर जरा भी भूल-चूक हो गई तो सब काम चौपट हो जाएगा और यूसुफ किसी तरह ना बच सकेगा।"

"बताइए।" मोहन ने कहा, "हम उसपर अमल करेंगे।"

बूढ़े ने कहा, "वह सामने मीनार का लोहे का जँगला नजर आ रहा है। वहाँ जा के हम तीनों रुक जायेंगे। फिर मीनार के अन्दर से एक आवाज आएगी, 'तुम कौन हो' उसके जवाब में सिर्फ यह कहना, 'हम सरकार के गुलाम हैं।' इसपर हमें आगे बढ़ने की इजाजत दी जाएगी। जब हम मीनार के अन्दर वाले फाटक पर पहुँचेंगे तो हमें फिर रुकना पड़ेगा। इस फाटक के बीच में एक सूराख है। इस सूराख के अन्दर से वे लोग हमें झाँक कर देखेंगे और इस बात का पता चलायेंगे कि हम वाकई सरकार के गुलाम हैं या नहीं।"

"इसका पता उन्हें कैसे चलेगा कि हम सरकार के गुलाम हैं?और फिर हमारे पास इसका क्या सबूत है कि हम सरकार के गुलाम हैं?"

"देखों वह तरकीब मैं तुम्हें बताता हूँ। जब तुम उस दरवाजे के पास पहुँचो तो खबरदार अपनी पलकों को किसी हालत में ना झपकाना। बस चुपचाप टकटकी बाँधे सूराख की तरफ देखते रहना। किसी हालत में पलकें ना झपकाना। सरकार के गुलामों की सबसे बड़ी निशानी यह है कि वे पलकें नहीं झपकाते, चुपचाप हाथ बाँधे हुक्म की तामील के लिए खड़े रहते हैं। समझ गए?"

शहजादी ने कहा, "जी! समझ गए।"

बूढ़े ने फिर खबरदार करते हुए कहा, "जो कुछ मैंने कहा है उसपर हर्फ-बा-हर्फ अमल करना। नहीं तो यूसुफ की जिन्दगी का मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

इसके बाद बूढ़ा, मोहन और शहजादी तीनों मीनार के आहनी जँगले के पास जा खड़े हुए। मीनार के अन्दर से आवाज आई, "कौन है?"

उन तीनों ने जवाब दिया, "सरकार के गुलाम।"

"क्या काम है?"

"सरकार की गुलामी चाहते हैं।"

"आगे बढ़ो।" आवाज आई।

ये तीनों आगे बढ़े। वाकई मीनार के बड़े फाटक के अन्दर एक छोटा सा सूराख था। उसके करीब जा कर तीनों खडे हो गए। चन्द मिनट तक बिना पलक झपकाए खड़े रहे हत्ता कि मोहन की आँखों में जलन पैदा होने लगी और शहजादी की आँखों से आँसू बहने लगे। अगर चन्द मिनट तक और इसी तरह खड़े रहना पड़ता तो शायद शहजादी की पलकें झपक जातीं। मगर खैर हुई कि थोड़े अर्से के बाद फाटक खुद-बखुद खुला और खुल कर खुद-बखुद फौरन बन्द हो गया।

मीनार के अन्दर जा कर बाबा ने अपने हाथ से इशारा कर के कहा, "इस जीने पर चढ़ते चलो। हमें पहले सीधे बर्फखाने के अन्दर जाना चाहिए। सूरज अस्त हो रहा है।"

भागते-भागते वे बहुत सी सीढ़ियाँ तय कर गए। और ऐन उस वक्त जब सूरज अस्त हो रहा था, वे तीनों बर्फखाने के अन्दर पहुँच गए। और बूढ़े ने वह लाल यूसुफ के माथे से लगा दिया।

लाल ने डंक वाली जगह से जहर चूसना शुरू किया। और उस वक्त एक अजीब मंजर दिखाई दिया। ज्यों-ज्यों लाल जहर चूसता जाता था, मीनार के अन्दर की रोशनी कम होती जाती थी। थोड़ी देर में बर्फखाने के जीने पर सैकड़ो भागते हुए कदमों की आवाजें सुनाई देने लगी। ये कदम बर्फखाने की तरफ भागते चले आ रहे थे। बाबा ने आगे बढ़ कर बर्फखाने का दरवाजा बन्द कर दिया।

जहर पी कर लाल की रंगत हरी होती जा रही थी। यूसुफ के चेहरे पर जिन्दगी की सुर्खी दौड़ने लगी। यकायक लाल ने सारा जहर चूस लिया और यूसुफ ने आँखें खोल दी। और उसके आँखें खोलते ही मीनार में चारों तरफ अँधेरा छा गया। और चारों तरफ से साँपों की खौफनाक फुँकारें सुनाई देने लगीं।

"लाल कहाँ है?लाल कहाँ है?" बूढ़े ने घबरा कर अँधेरे में टटोलना शुरू किया।

"मेरे हाथ में है।" यूसुफ ने चिल्ला के कहा।

लाल के अन्दर से हरे रंग की रोशनी फूट-फूट के निकल रही थी। चारों तरफ से साँपों की फुंकारें बढ़ती जा रही थी। ना जाने साँप किन तहखानों के अन्दर से होते हुए बर्फखाने में आ रहे थे।

बाबा ने चिल्ला के कहा, "जल्दी करो। इस लाल को तोड़ डालो।"

यूसुफ ने बाबा के हाथ से छड़ी ले ली और उसकी चाँदी की मूँठ को लाल पर मार-मार कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

लाल के टुकड़े होते ही एक जोर का धमाका हुआ। चारों तरफ बिजली सी कौंध गई और इस बिजली की रोशनी में बूढ़े ने देखा कि मीनार ऊपर से नीचे तक फट गया है और अड़ाड़ाधम कर

के सारी इमारत नीचे आ रही है।

बूढ़े ने चिल्ला के कहा, "भागो, भागो! यहाँ से फौरन भागो।"

बूढ़े ने शहजादी को अपने बाजुओं में उठा लिया और यूसुफ और मोहन को छड़ी पर सवार कर के मीनार से फौरन बाहर निकल आया। उनके निकलते ही मीनार की सारी इमारत धर्म से नीचे गिर पड़ी।

सारा शहर हिल गया। बहुत से मकान गिर गए। शहर के ऊपर जो लोहे की जाली लगी हुई थी, वह तो साफ उड़ गई और शहर से बहुत दूर जा पड़ी। लोग चीखते-चिल्लाते हुए घरों से बाहर निकल आए। रास्ते में उन्होंने बहुत से छोटे-छोटे साँपों को मरे हुए देखा। मीनार के पास उन्होंने एक अजीब तमाशा देखा।

उन्होंने देखा कि मीनार के मलबे के पास बहुत से अजदहे (अजगर) और खौफनाक साँप मरे पड़े है। लाल, जवाहर और कीमती साजो-सामान के ढेर बिखरे हुए पड़े हैं और उनके करीब एक हरे किबा वाला बूढ़ा खड़ा है और उसके साथ एक लड़की और दो छोटे लड़के हैं और वे तीनों हैरत से इस सारे मंजर को देख रहे हैं।

लोग बूढ़े के पास आ कर झुक गए और उसका शुक्रिया अदा करने लगे कि उसने उन्हें साँपों से निजात दिलाई।

बूढ़े ने कहा, "मेरा शुक्रिया अदा ना करो। इन तीन नन्हें-मुन्ने बच्चों का शुक्रिया अदा करो जिनकी बहादुरी से तुम्हारी जिन्दगी बच गई हैं। आज के बाद तुम्हें कोई साँप नहीं काटेगा। साँपों की सरकार हमेशा के लिए खत्म हो गई है।"

लोगों ने खुशी से तीनों बच्चों को अपने कन्धों पर उठा लिया और सारे शहर में बड़ी धूम-धाम से उनका जुलूस निकाला।

उस रात ये तीनों बच्चे बाबा के तहखाने में सोए। सुबह उठ कर यूसुफ ने बूढ़े का शुक्रिया अदा किया और दरख्त पर आगे बढ़ने की इजाजत चाही।

बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने जादू के आईने को ठीक करने में मसरूफ हो गया।

यूसुफ ने पूछा, "बाबा! हम जायें?"

यकायक जादू का आईना काम करने लगा। यूसुफ ने देखा कि एक झोंपड़ा है और उसके बाहर बहुत से लोग जमा हैं और शोरो-गुल कर रहे हैं। यकायक यूसुफ ने पहचान लिया कि यह तो उसका झोंपड़ा है।

बूढ़ा कुछ ना बोला। जादू के आइने को देखता रहा।

फिर यूसुफ ने देखा कि बहुत से सिपाही एक खाट उठा कर बाहर लाए और उसे जोर से फेंक दिया। खाट पर सोई एक बुढ़िया घबरा के उठी और चीखने लगी, "यूसुफ! युसुफ! तुम कहाँ हो?बादशाह के सिपाही मेरा घर छीन रहे हैं। यूसुफ, मेरे बेटे, तुम कहाँ हो?"

"माँ!" यूसुफ के मुँह से बेअख्तियार निकला।

बूढ़े ने पलट कर कहा, "तुम्हारी माँ मुसीबत में है।"

"हाँ बाबा!" यूसुफ ने घबरा के कहा, "मुझे फौरन उसकी मदद के लिए पहुँचना चाहिए।"

बाबा ने जादू के आईने के तार अलग कर दिए और आहिस्ता से कहा, "तो चलो, चलते हैं।"

बाबा ने तीनों को बिठाया और उलटे दरख्त की शाखों से नीचे को जाने लगे। अब तक यूसुफ और उसके साथी दरख्त के ऊपर चढ़ते आ रहे थे, मगर अब वे वापस यूसुफ के घर को जा रहे थे।

सैकड़ों मील तक नीचे और नीचे दरख्त की शाखें फैली हुई थी और उन शाखों के ऊपर गोया तैरते हुए वे तीनों जा रहे थे।

यकायक मोहन ने पूछा, "बाबा! उस शहर में जिसे हम अभी पीछे छोड़ के आए हैं, वे साँप कहाँ छिपे हुए थे?"

बाबा ने कह, "वे साँप नहीं थे, वे आदमी थे और आदमी के भेष में लोगों के साथ रहते थे। और वक्त और मौका देख कर डंक मारते थे। ऐसे आदमी साँपों से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं जो आदमी के भेष में रहते हैं और लोगों को डसते हैं।"

"ऐसे लोगों की पहचान क्या है?" शहजादी ने पूछा।

"बेटी ऐसे लोगों के दिलों में जहर भरा रहता है। और उनकी आँखों में पुतलियों की बजाय चाँदी की टिकलियाँ होती हैं। अगर तुम उन आँखों को गौर से देखो तो तुम उनको बखूबी पहचान सकोगी। यही वे आदमी हैं जो आदमियों को लूटते हैं और उनमें लड़ाइयाँ कराते हैं। उन आदमियों की आँखों में पुतलियाँ नहीं होती हैं, चाँदी की गोल-गोल टिकलियाँ होती हैं।"

छड़ी तेजी से उड़ी जा रही थी। अब दरख्त का तना नजदीक आ रहा था और दरार से रोशनी भी छन कर आ रही थी। थोड़ी देर में छड़ी नीचे उतरता हुआ दरार के बाहर निकल आयी। अब वे चारों यूसुफ के झोंपड़े के बहार के छोट से बागीचे में थे जहाँ बहुत से गाँव वाले, गाँव को खोजा, बादशाह और सिपाही जमा थे। और यूसुफ की माँ रो-रो कर बयान कर रही थी।

यूसुफ ने चिल्ला के कहा, "माँ!"

माँ ने हैरान हो कर अपने बेटे की तरफ देखा। फिर दौड़ कर उससे बगलगीर हुई। वह यूसुफ

का मुँह चूमती जाती थी और रोती जाती थी।

यकायक बादशाह ने गुस्से से चिल्ला कर कहा, "इसे भी पकड़ लो।"

बादशाह के सिपाहियों ने यूसुफ को पकड़ लिया।

बूढ़े ने बादशाह से पूछा, "इस गरीब लड़के का क्या कसूर है?"

बादशाह ने कहा, "यह भगोड़ा है। यह मेरी फौज में लड़ना नहीं चाहता। मैं साथ वाले मुल्क पर हमला करना चाहता था। उसने मेरी फौज में शामिल होने से इनकार कर दिया।"

"तुम दूसरे मुल्क पर क्यों हमला करना चाहते थे?"

"मुझे दौलत की जरूरत है।"

"तुम कितनी दौलत चाहते हो?" बूढ़े ने पूछा और अपनी किबा में हाथ डाल कर मुट्ठी भर लालो-जवाहर जमीन पर बिखेर दिए।

बादशाह और उसके सिपाही जल्दी-जल्दी लालो-जवाहर चुनने लगे। बूढ़े ने दूसरी बार जेब में हाथ डाल के एक और मुट्ठी लालो-जवाहर निकाले और उन्हें उलटे दरख्त वाले गड्ढे में फेंक दिया।

चन्द सिपाहियों ने दरार के अन्दर छलाँग लगा दी।

बादशाह ने उस बूढ़े से कहा, "यह तुमने क्या किया?"

बूढ़े ने कहा, "मैंने तुम्हें रास्ता दिखाया है। हम लोग इस गुफा के अन्दर से आए हैं। वहाँ अन्दर लालो-जवाहर की लाखों खदानें हैं। वहाँ तुम इतनी दौलत समेट सकते हो जितनी यहाँ कभी हासिल नहीं कर सकते।"

बादशाह और उसकी लालची बेटी दोनों ने गड्ढे में छलाँग लगा दी।

यूसुफ ने चिल्ला के कहा, "ठहरो! ठहरो!"

मगर बूढ़े ने उसका हाथ पकड़ के कहा, "उन्हें मत रोको। यह सब लोग गड्ढे में जा चुके हैं। अब तुम जल्दी से इस दरार को मिट्टी डाल के भर दो।"

यूसुफ हैरान खड़ा रहा।

बूढ़े ने मुड़ कर गाँव वालों से कहा, "अगर तुम बादशाह से हमेशा के लिए छुटकारा हासिल करना चाहते हो तो यही वक्त है। जल्दी से गड्ढे को मिट्टी डाल के भर दो। कहीं बादशाह लौट ना आए।"

बात यूसुफ की समझ में आ गई। यूसुफ ने बेलचा हाथ में ले लिया और मिट्टी डालने लगा। उसकी देखा-देखी गाँव के दूसरे नौजवान भी मिट्टी डालने लगे। थोड़ी देर में सारे गाँव ने गड्ढे को मिट्टी डाल के भर दिया।

जब गड्ढा बिल्कुल भर गया और मिट्टी जमीन के बराबर हो गई तो यूसुफ ने बड़ी हसरत से कहा, "मगर, बाबा! इसके अन्दर तो मेरा दरख्त था।"

बूढ़े ने कहा, "वह दरख्त तो अब भी मौजूद है। उस दरख्त पर चढ़ के तुमने जिन्दगी का इतना तजुर्बा हासिल किया है। अब उस तजुर्बे से अपने गाँव वालों को भी फायदा पहुँचाओ। इस दरख्त ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है, वह सब तुम अपने हमसायों को सिखा सकते हो।"

"मगर, बाबा! मैं तो पूरे तौर पर उस दरख्त पर चढ़ा भी नहीं।" यूसुफ ने कहा, "मैंने तो उसकी चोटी भी नहीं देखी। बाबा! मुझे उस दरख्त की चोटी देखने की बड़ी ख़ाहिश थी।"

बूढ़े ने मुस्करा कर कहा, "बेटा! यह कोई मामूली दरख्त नहीं है। यह इंसान की तरक्की का दरख्त है। उसकी चोटी आज तक किसी ने नहीं देखी।"

यूसुफ के चेहरे से परेशानी और हैरत दूर हो गई। उसके दिल के बहुत से तारीक कोनों में रोशनी फैल गई। यकायक उसकी समझ में बहुत कुछ आ गया। उसने बड़ी इज्जत से बाबा की कबा को चूम लिया और बोला, "बाबा! तुमने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मैं तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा कर सकता हूँ। बस मैं यही अर्ज करना चाहता हूँ कि आज से यह झोंपड़ा आपका है। आज से आप हमारे साथ रहो बाबा, इस छोटे से झोंपड़े में। यहाँ मोहन भी रहेगा और शहजादी भी।"

बाबा ने शहजादी के सिर पर हाथ फेर के कहा, "यूसुफ सभी छोटी लड़कियाँ शहजादी होती हैं। तुम इसको अपने घर में रखो और अपने दोस्त मोहन को भी। अपनी माँ की खिदमत करो। अपने गाँव वालों को अपने इल्म और तजुर्बे से फायदा पहुँचाओ। मैं चलता हूँ।"

"क्यों बाबा?आप रुकेंगे क्यों नहीं?" मोहन ने पूछा।

"रुक जाइए।" शहजादी ने बाबा से लिपट कर बड़े प्यार से कहा।

"रुक नहीं सकता, बेटी।" बाबा ने आहिस्ता से कहा, "मेरा काम रुकना नहीं, चलना है। मैं चलता रहता हूँ। हमेशा चलता रहता हूँ क्योंकि मेरा नाम तारीख (इतिहास) है।"

यह कह कर बाबा ने फड़फड़ते परों वाली छड़ी को अपने हाथ में लिया और आगे चल पड़ा। और बहुत दूर तक यूसुफ, शहजादी और मोहन की निगाहें उसका पीछा करती रहीं। आखिर रास्ते के एक मोड़ पर आ के वह उनकी निगाहों से ओझल हो गया।

यूसुफ की माँ ने बड़े प्यार से यूसुफ और उसके साथियों की तरफ देखा और कहा, "बाबा ठीक कहता था। चलो, तुम्हारा घर तुम्हारी राह देख रहा है।"

और यूसुफ ने मोहन और शहजादी का हाथ पकड़ा और तीनों यूसुफ की माँ के पीछे फूलों वाली क्यारी से गुजरते हुए झोंपड़े के अन्दर चले गए।

■

अनुराग ट्रस्ट